यात्री का मार्ग

मत्ती रचित सुसमाचार

बाइबल सोसायटी ऑफ़ इंडिया
२० महात्मा गांधी रोड
बंगलौर

THE WAY OF THE PILGRIM

The Gospel According to Matthew

Hindi—O.V.

1976

250,000 Copies—580

The Bible Society of India
20 Mahatma Gandhi Road
Bangalore

मत्ती रचित सुसमाचार

यीशु के पूर्वज

१ इब्राहीम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली। २ इब्राहीम से इसहाक उत्पन्न हुआ; इसहाक से याकूब उत्पन्न हुआ; और याकूब से यहूदा और उसके भाई उत्पन्न हुए। ३ यहूदा से फिरिस और यहूदा और तामार से जोरह उत्पन्न हुए; और फिरिस से हिस्रोन उत्पन्न हुआ; और हिस्रोन से एराम उत्पन्न हुआ। ४ और एराम से अम्मीनादाब उत्पन्न हुआ; और अम्मीनादाब से नहशोन और नहशोन से सलमोन उत्पन्न हुआ। ५ और सलमोन और राहब से बोअज उत्पन्न हुआ: और बोअज और रूत से ओबेद उत्पन्न हुआ; और ओबेद से यिशै उत्पन्न हुआ। ६ और यिशै से दाऊद राजा उत्पन्न हुआ॥

७ और दाऊद से सुलैमान उस स्त्री से उत्पन्न हुआ जो पहिले उरिय्याह की पत्नी थी। ८ और सुलैमान से रहबाम उत्पन्न हुआ; और रहबाम से अबिय्याह उत्पन्न हुआ; और अबिय्याह से आसा उत्पन्न हुआ; और आसा से यहोशाफात उत्पन्न हुआ; और यहोशाफात से योराम उत्पन्न हुआ; और योराम से उज्जियाह उत्पन्न हुआ। ९ और उज्जियाह से योताम उत्पन्न हुआ; और योताम से आहाज उत्पन्न हुआ; और आहाज से हिजकिय्याह उत्पन्न हुआ। १० और हिजकिय्याह से मनश्शिह उत्पन्न हुआ, और मनश्शिह से आमोन उत्पन्न हुआ; और आमोन से योशिय्याह उत्पन्न हुआ। ११ और बंदी होकर बाबुल जाने के समय में योशिय्याह से यकुन्याह, और उसके भाई उत्पन्न हुए॥

१२ बंदी होकर बाबुल पहुंचाए जाने के बाद यकुन्याह से शालतिएल उत्पन्न हुआ; और शालतिएल से जरुब्बाबिल उत्पन्न हुआ। १३ और जरुब्बाबिल से अबीहूद उत्पन्न हुआ; और अबीहूद से इल्यांकीम उत्पन्न हुआ; और इल्यांकीम से अजोर उत्पन्न हुआ। १४ और अजोर से

सदोक उत्पन्न हुआ; और सदोक से अखीम उत्पन्न हुआ; और अखीम से इलीहूद उत्पन्न हुआ। १५ और इलीहूद से इलियाजार उत्पन्न हुआ; और इलियाजार से मत्तान उत्पन्न हुआ; और मत्तान से याकूब उत्पन्न हुआ। १६ और याकूब से यूसुफ उत्पन्न हुआ; जो मरियम का पति था जिस से यीशु जो मसीह कहलाता है उत्पन्न हुआ॥

१७ इब्राहीम से दाऊद तक सब चौदह पीढ़ी हुई और दाऊद से बाबुल को बंदी होकर पहुंचाए जाने तक चौदह पीढ़ी और बंदी होकर बाबुल को पहुंचाए जाने के समय से लेकर मसीह तक चौदह पीढ़ी हुई॥

यीशु का जन्म

१८ अब यीशु मसीह का जन्म इस प्रकार से हुआ, कि जब उस की माता मरियम की मंगनी यूसुफ के साथ हो गई, तो उनके इकट्ठे होने से पहिले वह पवित्र आत्मा की ओर से गर्भवती पाई गई। १९ सो उसके पति यूसुफ ने जो धर्मी था और उसे बदनाम करना नहीं चाहता था, उसे चुपके से त्याग देने की मनसा की। २० जब वह इन बातों के सोच ही में था तो प्रभु का स्वर्गदूत उसे स्वप्न में दिखाई देकर कहने लगा; हे यूसुफ दाऊद की सन्तान, तू अपनी पत्नी मरियम को अपने यहां ले आने से मत डर; क्योंकि जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। २१ वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना; क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा। २२ यह सब कुछ इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था; वह पूरा हो। २३ कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिसका अर्थ यह है "परमेश्वर हमारे साथ"। २४ सो यूसुफ नींद से जागकर प्रभु के दूत की आज्ञा अनुसार अपनी पत्नी को अपने यहां ले आया। २५ और जब तक वह पुत्र न जनी तब तक वह उसके पास न गया: और उस ने उसका नाम यीशु रखा॥

ज्योतिषियों का दर्शन के लिये आना

२ हेरोदेस राजा के दिनों में जब यहूदिया के बैतलहम में यीशु का जन्म हुआ, तो देखो, पूर्व से कई ज्योतिषी यरूशलेम में आकर पूछने लगे। २ कि यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहां है? क्योंकि हम ने पूर्व में उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम करने आए हैं। ३ यह सुनकर हेरोदेस राजा और उसके साथ सारा यरूशलेम घबरा गया। ४ और उस ने लोगों के सब महायाजकों और शास्त्रियों को इकट्ठे कर के उन से पूछा, कि मसीह का जन्म कहां होना चाहिए? ५ उन्हों ने उस से कहा, यहूदिया के बैतलहम में; क्योंकि भविष्यद्वक्ता के द्वारा यों लिखा गया है। ६ कि हे बैतलहम, जो यहूदा के देश में है, तू किसी रीति से यहूदा के अधिकारियों में सब से छोटा नहीं; क्योंकि तुझ में से एक अधिपति निकलेगा, जो मेरी प्रजा इस्राएल की रखवाली करेगा। ७ तब हेरोदेस ने ज्योतिषियों को चुपके से बुलाकर उन से पूछा, कि तारा ठीक किस समय दिखाई दिया था। ८ और उस ने यह कहकर उन्हें बैतलहम को भेजा, कि जाकर उस बालक के विषय में ठीक ठीक मालूम करो और जब वह मिल जाए तो मुझे समाचार दो ताकि मैं भी आकर उसको प्रणाम करूं। ९ वे राजा की बात सुनकर चले गए, और देखो, जो तारा उन्हों ने पूर्व में देखा था, वह उनके आगे-आगे चला, और जहां बालक था, उस जगह के ऊपर पहुंचकर ठहर गया। १० उस तारे को देखकर वे अति आनन्दित हुए। ११ और उस घर में पहुंचकर उस बालक को उसकी माता मरियम के साथ देखा, और मुंह के बल गिरकर उसे प्रणाम किया; और अपना अपना थैला खोलकर उसको सोना, और लोहबान, और गन्धरस की भेंट चढ़ाई। १२ और स्वप्न में यह चितौनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए॥

मिसर में भागना

१३ उनके चले जाने के बाद देखो, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दिखाई देकर कहा, उठ; उस बालक को और उसकी माता को लेकर

मिस्र देश को भाग जा; और जब तक मैं तुझ से न कहूं, तब तक वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूंढ़ने पर है कि उसे मरवा डाले। १४ वह रात ही को उठकर बालक और उसकी माता को लेकर मिस्र को चल दिया। १५ और हेरोदेस के मरने तक वहीं रहा; इसलिये कि वह वचन जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था कि मैं ने अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया पूरा हो॥

हेरोदेस द्वारा बैतलहम के बच्चों की हत्या

१६ जब हेरोदेस ने यह देखा, कि ज्योतिषियों ने मेरे साथ ठट्ठा किया है, तब वह क्रोध से भर गया; और लोगों को भेजकर ज्योतिषियों से ठीक ठीक पूछे हुए समय अनुसार बैतलहम और उसके आस पास के सब लड़कों को जो दो वर्ष के, वा उस से छोटे थे, मरवा डाला। १७ तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हुआ, १८ कि रामाह में एक करुण-नाद सुनाई दिया, रोना और बड़ा विलाप, राहेल अपने बालकों के लिये रो रही थी, और शान्त होना न चाहती थी, क्योंकि वे हैं नहीं॥

मिसर से लौटना

१९ हेरोदेस के मरने के बाद देखो, प्रभु के दूत ने मिस्र में यूसुफ को स्वप्न में दिखाई देकर कहा। २० कि उठ, बालक और उसकी माता को लेकर इस्राएल के देश में चला जा; क्योंकि जो बालक के प्राण लेना चाहते थे, वे मर गए। २१ सो वह उठा, और बालक और उसकी माता को साथ लेकर इस्राएल के देश में आया। २२ परन्तु यह सुनकर कि अरखिलाउस अपने पिता हेरोदेस की जगह यहूदिया पर राज्य कर रहा है, वहां जाने से डरा; और स्वप्न में चितौनी पाकर गलील देश में चला गया। २३ और नासरत नाम नगर में जा बसा; ताकि वह वचन पूरा हो, जो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा गया था, कि वह नासरी कहलाएगा॥

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला और उसका संदेश

३ उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा। २ कि मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। ३ यह वही है जिसकी चर्चा यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा की गई कि जंगल में एक पुकारनेवाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो, उसकी सड़कें सीधी करो। ४ यह यूहन्ना ऊंट के रोम का वस्त्र पहिने था, और अपनी कमर में चमड़े का पटुका बान्धे हुए था, और उसका भोजन टिड्डियां और बनमधु था। ५ तब यरूशलेम के और सारे यहूदिया के, और यरदन के आस पास के सारे देश के लोग उसके पास निकल आए। ६ और अपने अपने पापों को मानकर यरदन नदी में उस से बपतिस्मा लिया। ७ जब उस ने बहुतेरे फरीसियों और सदूकियों को बपतिस्मा के लिये अपने पास आते देखा, तो उन से कहा, कि हे सांप के बच्चो, तुम्हें किस ने जता दिया, कि आनेवाले क्रोध से भागो? ८ सो मन फिराव के योग्य फल लाओ। ९ और अपने अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता इब्राहीम है; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर इन पत्थरों से इब्राहीम के लिये सन्तान उत्पन्न कर सकता है। १० और अब कुल्हाड़ा पेड़ों की जड़ पर रखा हुआ है, इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में झोंका जाता है। ११ मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परन्तु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। १२ उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परन्तु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं॥

यीशु का बपतिस्मा

१३ उस समय यीशु गलील से यरदन के किनारे पर यूहन्ना के पास उस से बपतिस्मा लेने आया। १४ परन्तु यूहन्ना यह कहकर उसे रोकने लगा,

कि मुझे तेरे हाथ से बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, और तू मेरे पास आया है? १५ यीशु ने उसको यह उत्तर दिया, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है, तब उस ने उसकी बात मान ली। १६ और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिये आकाश खुल गया; और उस ने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर की नाईं उतरते और अपने ऊपर आते देखा। १७ और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं॥

जंगल में यीशु की परीक्षा

४ तब उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान से उसकी परीक्षा हो। २ वह चालीस दिन, और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी। ३ तब परखनेवाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे, कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं। ४ उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक बचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा। ५ तब शैतान उसे पवित्र नगर में ले गया और मन्दिर के कंगूरे पर खड़ा किया। ६ और उस से कहा यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो अपने आप को नीचे गिरा दे; क्योंकि लिखा है, कि वह तेरे विषय में अपने स्वर्गदूतों को आज्ञा देगा; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे; कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे। ७ यीशु ने उस से कहा; यह भी लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर। ८ फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका विभव दिखाकर। ९ उस से कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा। १० तब यीशु ने उस से कहा; हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर। ११ तब शैतान उसके पास से चला गया; और देखो, स्वर्गदूत आकर उसकी सेवा करने लगे॥

गलील के कफ़रनहूम में यीशु का निवास

१२ जब उस ने यह सुना कि यूहन्ना पकड़वा दिया गया, तो वह गलील को चला गया। १३ और नासरत को छोड़कर कफ़रनहूम में जो झील के किनारे जबूलून और नपताली के देश में है जाकर रहने लगा। १४ ताकि जो यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो। १५ कि जबूलून और नपताली के देश, झील के मार्ग से यरदन के पार अन्य-जातियों का गलील। १६ जो लोग अन्धकार में बैठे थे उन्हों ने बड़ी ज्योति देखी; और जो मृत्यु के देश और छाया में बैठे थे, उन पर ज्योति चमकी॥

यीशु के प्रचार का आरम्भ

१७ उस समय से यीशु ने प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है॥

उसका अपने पहिले चेलों का बुलाना

१८ उस ने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों अर्थात् शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुवे थे। १९ और उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुमको मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊंगा। २० वे तुरन्त जालों को छोड़कर उसके पीछे हो लिए। २१ और वहां से आगे बढ़कर, उस ने और दो भाइयों अर्थात् जबदी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को अपने पिता जबदी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधारते देखा; और उन्हें भी बुलाया। २२ वे तुरन्त नाव और अपने पिता को छोड़कर उसके पीछे हो लिए॥

गलील में दौरा करके कार्य करना

२३ और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उनकी सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा। २४ और सारे सूरिया में

उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकडे हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गीवालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया। २५ और गलील और दिकापुलिस और यरूशलेम और यहूदिया से और यरदन के पार से भीड़ की भीड़ उसके पीछे हो ली॥

पहाड़ी उपदेश

५ वह इस भीड़ को देखकर, पहाड़ पर चढ़ गया; और जब बैठ गया, तो उसके चेले उसके पास आए। २ और वह अपना मुंह खोलकर उन्हें यह उपदेश देने लगा॥

धन्य वादियां

३ धन्य हैं वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ४ धन्य हैं वे, जो शोक करते हैं, क्योंकि वे शांति पाएंगे। ५ धन्य हैं वे, जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे। ६ धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और पियासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। ७ धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। ८ धन्य हैं वे, जिनके मन शुद्ध हैं क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। ९ धन्य हैं वे, जो मेल करानेवाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे। १० धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। ११ धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें कहें। १२ आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिये स्वर्ग में बड़ा फल है इसलिये कि उन्हों ने उन भविष्यद्वक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था॥

नमक से और बत्ती से शिक्षा

१३ तुम पृथ्वी के नमक हो; परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाय, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम

का नहीं, केवल इसके कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए। १४ तुम जगत की ज्योति हो; जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है वह छिप नहीं सकता। १५ और लोग दिया जलाकर पैमाने के नीचे नहीं परन्तु दीवट पर रखते हैं, तब उस से घर के सब लोगों को प्रकाश पहुंचता है। १६ उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनष्यों के साम्हने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें।।

पुराना नियम और यीशु का नियम

१७ यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों का लोप करने आया हूं। १८ लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं; क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। १९ इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सब से छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उनका पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान कहलाएगा। २० क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से बढ़कर न हो, तो तुम स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।।

क्रोध और हत्या

२१ तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि हत्या न करना, और जो कोई हत्या करेगा वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा। २२ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा : और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे "अरे मूर्ख" वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। २३ इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहां तू स्मरण करे, कि मेरे भाई के मन में मेरी

ओर से कुछ विरोध है, २४ तो अपनी भेंट वहीं वेदी के साम्हने छोड़ दे और जाकर पहिले अपने भाई से मेल मिलाप कर; तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। २५ जब तक तू अपने मुद्दई के साथ मार्ग ही में है, उस से झटपट मेल मिलाप कर ले कहीं ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे हाकिम को सौंपे, और हाकिम तुझे सिपाही को सौंप दे और तू बन्दीगृह में डाल दिया जाए। २६ में तुझ से सच कहता हूं कि जब तक तू कौड़ी कौडी भर न दे तब तक वहां से छूटने न पाएगा।।

अपवित्रता

२७ तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि व्यभिचार न करना। २८ परन्तु में तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री पर कुदृष्टि डाले वह अपने मन में उस से व्यभिचार कर चुका। २९ यदि तेरी दहिनी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे; क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए। ३० और यदि तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाए, तो उसको काटकर अपने पास से फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है, कि तेरे अंगों में से एक नाश हो जाए और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाए।।

३१ यह भी कहा गया था, कि जो कोई अपनी पत्नी को त्याग दे वह उसे त्यागपत्र दे। ३२ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं कि जो कोई अपनी पत्नी को व्यभिचार के सिवा किसी और कारण से छोड़ दे, तो वह उस से व्यभिचार करवाता है; और जो कोई उस त्यागी हुई से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है।।

शपथ और सत्यता

३३ फिर तुम सुन चुके हो, कि पूर्वकाल के लोगों से कहा गया था कि झूठी शपथ न खाना, परन्तु प्रभु के लिये अपनी शपथ को पूरी करना। ३४ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि कभी शपथ न खाना; न तो स्वर्ग की, क्योंकि वह परमेश्वर का सिंहासन है। ३५ न धरती की, क्योंकि

वह उसके पांवों की चौकी है; न यरूशलेम की, क्योंकि वह महाराजा का नगर है। ३६ अपने सिर की भी शपथ न खाना क्योंकि तू एक बाल को भी न उजला, न काला कर सकता है। ३७ परन्तु तुम्हारी बात हां की हां, या नहीं की नहीं हो; क्योंकि जो कुछ इस से अधिक होता है वह बुराई से होता है॥

पलटा लेना

३८ तुम सुन चुके हो; कि कहा गया था, कि आंख के बदले आंख, और दांत के बदले दांत। ३९ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि बुरे का सामना न करना; परन्तु जो कोई तेरे दहिने गाल पर थप्पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे। ४० और यदि कोई तुझ पर नालिश करके तेरा कुरता लेना चाहे, तो उसे दोहर भी ले लेने दे। ४१ और जो कोई तुझे कोस भर बेगार में ले जाए तो उसके साथ दो कोस चला जा। ४२ जो कोई तुझ से मांगे, उसे दे; और जो तुझ से उधार लेना चाहे, उस से मुंह न मोड़॥

प्रेम और सिद्ध चरित्र

४३ तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था; कि अपने पड़ोसी से प्रेम रखना, और अपने बैरी से बैर। ४४ परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सतानेवालों के लिये प्रार्थना करो। ४५ जिससे तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है, और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। ४६ क्योंकि यदि तुम अपने प्रेम रखनेवालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा? क्या महसूल लेनेवाले भी ऐसा ही नहीं करते? ४७ और यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते? ४८ इसलिये चाहिये कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है॥

गुप्त दान

६ सावधान रहो! तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे ।।

२ इसलिये जब तू दान करे, तो अपने आगे तुरही न बजवा, जैसा कपटी, सभाओं और गलियों में करते हैं, ताकि लोग उनकी बड़ाई करें, मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना फल पा चुके। ३ परन्तु जब तू दान करे, तो जो तेरा दहिना हाथ करता है, उसे तेरा बांया हाथ न जानने पाए। ४ ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा ।।

गुप्त प्रार्थना

५ और जब तू प्रार्थना करे, तो कपटियों के समान न हो क्योंकि लोगों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों की मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उनको अच्छा लगता है; मैं तुम से सच कहता हूं; कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। ६ परन्तु जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा; और द्वार बन्द कर के अपने पिता से जो गुप्त में है प्रार्थना कर; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा। ७ प्रार्थना करते समय अन्यजातियों की नाईं बक बक न करो क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने से उनकी सुनी जाएगी। ८ सो तुम उनकी नाईं न बनो, क्योंकि तुम्हारा पिता तुम्हारे मांगने से पहिले ही जानता है, कि तुम्हारी क्या आवश्यकता है ।।

प्रभु की प्रार्थना

९ सो तुम इस रीति से प्रार्थना किया करो; "हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए। १० तेरा राज्य आए; तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसी ही पृथ्वी पर भी हो। ११ हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे। १२ और जिस प्रकार हम ने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा

कर। १३ और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा; क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं।" आमीन। १४ इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। १५ और यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे तो तुम्हारा पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा॥

उपवास रखना

१६ जब तुम उपवास करो, तो कपटियों की नाईं तुम्हारे मुंह पर उदासी न छाई रहे, क्योंकि वे अपना मुंह बनाए रहते हैं, ताकि लोग उन्हें उपवासी जानें; मैं तुम से सच कहता हूं, कि वे अपना प्रतिफल पा चुके। १७ परन्तु जब तू उपवास करे तो अपने सिर पर तेल मल और मुंह धो। १८ ताकि लोग नहीं परन्तु तेरा पिता जो गुप्त में है, तुझे उपवासी जाने; इस दशा में तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा॥

सत्य धन

१९ अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीडा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। २० परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न तो कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते हैं। २१ क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा॥

उजियाला और अन्धियारा

२२ शरीर का दिया आंख है: इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो, तो तेरा सारा शरीर भी उजियाला होगा। २३ परन्तु यदि तेरी आंख बुरी हो, तो तेरा सारा शरीर भी अन्धियारा होगा; इस कारण वह उजियाला जो तुझ में है यदि अन्धकार हो तो वह अन्धकार कैसा बड़ा होगा। २४ कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वा एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; "तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"

चिन्ता, और परमेश्वर पर भरोसा

२५ इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि अपने प्राण के लिये यह चिन्ता न करना कि हम क्या खाएंगे? और क्या पीएंगे? और न अपने शरीर के लिये कि क्या पहिनेंगे? क्या प्राण भोजन से, और शरीर वस्त्र से बढ़ कर नहीं। २६ आकाश के पक्षियों को देखो! वे न बोते हैं, न काटते हैं, और न खत्तों में बटोरते हैं; तौभी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको खिलाता है; क्या तुम उन से अधिक मूल्य नहीं रखते? २७ तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है? २८ और वस्त्र के लिये क्यों चिन्ता करते हो? जंगली सोसनों पर ध्यान करो, कि वे कैसे बढ़ते हैं, वे न तो परिश्रम करते, न कातते हैं। २९ तौभी मैं तुम से कहता हूं, कि सुलैमान भी, अपने सारे विभव में उन में से किसी के समान वस्त्र पहिने हुए न था। ३० इसलिये जब परमेश्वर मैदान की घास को जो आज है, और कल भाड़ में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहिनाता है, तो हे अल्पविश्वासियो, तुम को वह क्योंकर न पहिनाएगा? ३१ इसलिये तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे? ३२ क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं, और तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है, कि तुम्हें ये सब वस्तुएं चाहिए। ३३ इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी। ३४ सो कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा; आज के लिये आज ही का दुख बहुत है॥

दूसरों पर दोष लगाना

७ दोष मत लगाओ, कि तुम पर भी दोष न लगाया जाए। २ क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा, और जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। ३ तू क्यों अपने भाई की आंख के तिनके को देखता है, और अपनी आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? ४ और जब तेरी ही

आंख में लट्ठा है, तो तू अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, कि ला में तेरी आंख से तिनका निकाल दूं। ५ हे कपटी, पहले अपनी आंख में से लट्ठा निकाल ले, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भांति देखकर निकाल सकेगा॥

६ पवित्र वस्तु कुत्तों को न दो, और अपने मोती सुअरों के आगे मत डालो; ऐसा न हो कि वे उन्हें पांवों तले रौंदें और पलटकर तुम को फाड़ डालें॥

प्रार्थना की उत्तेजना

७ मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। ८ क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा। ९ तुम में से ऐसा कौन मनुष्य है, कि यदि उसका पुत्र उस से रोटी मांगे, तो वह उसे पत्थर दे? १० वा मछली मांगे, तो उसे सांप दे? ११ सो जब तुम बुरे होकर, अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को अच्छी वस्तुएं क्यों न देगा?

सुनहला नियम

१२ इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो; क्योंकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की शिक्षा यही है॥

दो मार्ग

१३ सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। १४ क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं॥

सत्य और झूठ

१५ झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, जो भेड़ों के भेष में तुम्हारे पास आते हैं, परन्तु अन्तर में फाड़नेवाले भेडिए हैं। १६ उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे क्या झाडियों से अंगूर, वा ऊंटकटारों से अंजीर तोड़ते हैं? १७ इसी प्रकार हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल लाता है और निकम्मा पेड बुरा फल लाता है। १८ अच्छा पेड़ बुरा फल नहीं ला सकता, और न निकम्मा पेड़ अच्छा फल ला सकता है। १९ जो जो पेड अच्छा फल नहीं लाता, वह काटा और आग में डाला जाता है। २० सो उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे॥

बचन और कर्म

२१ जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है। २२ उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे; हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचंम्भे के काम नहीं किए? २३ तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ॥

दो नेवें

२४ इसलिये जो कोई मेरी ये बातें सुन कर उन्हें मानता है वह उस बुद्धिमान मनुर्ष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर चट्टान पर बनाया। २५ और मेंह बरसा और बाढ़ें आईं, और आंधियां चलीं, और उस घर पर टक्करें लगीं, परन्तु वह नहीं गिरा, क्योंकि उसकी नेव चट्टान पर डाली गई थी। २६ परन्तु जो कोई मेरी ये बातें सुनता है और उन पर नहीं चलता वह उस निर्बुद्धि मनुष्य की नाईं ठहरेगा जिस ने अपना घर बालू पर बनाया। २७ और मेंह बरसा, और बाढ़ें आईं, और आंधियां चलीं और उस घर पर टक्करें लगीं और वह गिर कर सत्यानाश हो गया॥

२८ जब यीशु ये बातें कह चुका, तो ऐसा हुआ कि भीड़ उसके उपदेश से चकित हुई! २९ क्योंकि वह उनके शास्त्रियों के समान नहीं परन्तु अधिकारी की नाईं उन्हें उपदेश देता था ॥

कोढ़ी का चंगा करना

८ जब वह उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। २ और देखो, एक कोढ़ी ने पास आकर उसे प्रणाम किया और कहा; कि हे प्रभु यदि तू चाहे, तो मुझे शुद्ध कर सकता है। ३ यीशु ने हाथ बढ़ाकर उसे छूआ, और कहा, मैं चाहता हूं, तू शुद्ध हो जा, और वह तुरन्त कोढ़ से शुद्ध हो गया। ४ यीशु ने उस से कहा; देख, किसी से न कहना परन्तु जाकर अपने आप को याजक को दिखला और जो चढ़ावा मूसा ने ठहराया है उसे चढ़ा, ताकि उनके लिये गवाही हो ॥

सेनापति के नौकर का चंगा करना

५ और जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उससे बिनती की। ६ कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है। ७ उस ने उस से कहा, मैं आकर उसे चंगा करूंगा। ८ सूबेदार ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा। ९ क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूं, कि यह कर, तो वह करता है। १० यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया। ११ और मैं तुम से कहता हूं, कि बहुतेरे पूर्व और पश्चिम से आकर इब्राहीम और इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में बैठेंगे। १२ परन्तु राज्य के सन्तान बाहर अंधियारे में डाल दिए जाएंगे: वहां रोना और दांतों को पीसना होगा। १३ और यीशु ने

सूबेदार से कहा, जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥

शिमौन की सास और कई औरों का चंगा करना

१४ और यीशु ने पतरस के घर में आकर उसकी सास को ज्वर में पड़ी देखा। १५ उस ने उसका हाथ छूआ और उसका ज्वर उतर गया; और वह उठकर उसकी सेवा करने लगी। १६ जब संध्या हुई तब वे उसके पास बहुत से लोगों को लाए जिन में दुष्टात्माएं थीं और उस ने उन आत्माओं को अपने वचन से निकाल दिया, और सब बीमारों को चंगा किया। १७ ताकि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हो, कि उस ने आप हमारी दुर्बलताओं को ले लिया और हमारी बीमारियों को उठा लिया॥

होनहार चेलों की परख

१८ यीशु ने अपनी चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखकर उस पार जाने की आज्ञा दी। १९ और एक शास्त्री ने पास आकर उस से कहा, हे गुरु, जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे पीछे हो लूंगा। २० यीशु ने उस से कहा, लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है। २१ एक और चेले ने उस से कहा, हे प्रभु, मुझे पहिले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं। २२ यीशु ने उस से कहा, तू मेरे पीछे हो ले; और मुरदों को अपने मुरदे गाड़ने दे॥

आन्धी का शांत करना

२३ जब वह नाव पर चढ़ा, तो उसके चेले उसके पीछे हो लिए। २४ और देखो, झील में एक ऐसा बड़ा तूफान उठा कि नाव लहरों से ढंपने लगी; और वह सो रहा था। २५ तब उन्हों ने पास आकर उसे जगाया, और कहा, हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते हैं। २६ उस ने उन से कहा; हे अल्पविश्वासियों, क्यों डरते हो? तब उस ने उठकर आन्धी

और पानी को डांटा, और सब शान्त हो गया। २७ और लोग अचम्भा करके कहने लगे कि यह कैसा मनुष्य है, कि आन्धी और पानी भी उसकी आज्ञा मानते हैं।।

दुष्टात्माओं से ग्रसित जन

२८ जब वह उस पार गदरेनियों के देश में पहुंचा, तो दो मनुष्य जिन में दुष्टात्माएं थीं कब्रों से निकलते हुए उसे मिले, जो इतने प्रचण्ड थे, कि कोई उस मार्ग से जा नहीं सकता था। २९ और देखो उन्हों ने चिल्लाकर कहा; हे परमेश्वर के पुत्र, हमारा तुझ से क्या काम? क्या तू समय से पहिले हमें दुःख देने यहां आया है? ३० उन से कुछ दूर बहुत से सूअरों का एक झुण्ड चर रहा था। ३१ दुष्टात्माओं ने उस से यह कहकर बिनती की, कि यदि तू हमें निकालता है, तो सूअरों के झुण्ड में भेज दे। ३२ उस ने उन से कहा, जाओ, वे निकलकर सूअरों में पैठ गए और देखो, सारा झुण्ड कड़ाड़े पर से झपटकर पानी में जा पड़ा, और डूब मरा। ३३ और चरवाहे भागे, और नगर में जाकर ये सब बातें और जिन में दुष्टात्माएं थीं उनका सारा हाल कह सुनाया। ३४ और देखो, सारे नगर के लोग यीशु से भेंट करने को निकल आए और उसे देखकर बिनती की, कि हमारे सिवानों से बाहर निकल जा।।

अर्धांगी का चंगा करना

९ फिर वह नाव पर चढ़कर पार गया; और अपने नगर में आया। २ और देखो, कई लोग एक झोले के मारे हुए को खाट पर रख कर उसके पास लाए; यीशु ने उनका विश्वास देखकर, उस झोले के मारे हुए से कहा; हे पुत्र, ढाढ़स बान्ध; तेरे पाप क्षमा हुए। ३ और देखो, कई शास्त्रियों ने सोचा, कि यह तो परमेश्वर की निन्दा करता है। ४ यीशु ने उनके मन की बातें मालूम करके कहा, कि तुम लोग अपने अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो। ५ सहज क्या है, यह कहना, कि तेरे पाप क्षमा हुए; या यह कहना कि उठ और चल फिर। ६ परन्तु इसलिये

कि तुम जान लो कि मनुष्य के पुत्र को पृथ्वी पर पाप क्षमा करने का अधिकार है (उस ने झोले के मारे हुए से कहा) उठ : अपनी खाट उठा, और अपने घर चला जा। ७ वह उठकर अपने घर चला गया। ८ लोग यह देखकर डर गए और परमेश्वर की महिमा करने लगे जिस ने मनुष्यों को ऐसा अधिकार दिया है॥

मत्ती की बुलाहट

९ वहां से आगे बढ़कर यीशु ने मत्ती नाम एक मनुष्य को महसूल की चौकी पर बैठे देखा, और उस से कहा, मेरे पीछे हो ले। वह उठकर उसके पीछे हो लिया॥

१० और जब वह घर में भोजन करने के लिये बैठा तो बहुतेरे महसूल लेनेवाले और पापी आकर यीशु और उसके चेलों के साथ खाने बैठे। ११ यह देखकर फरीसियों ने उसके चेलों से कहा; तुम्हारा गुरु महसूल लेनेवालों और पापियों के साथ क्यों खाता है? १२ उस ने यह सुनकर उन से कहा, वैद्य भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों को अवश्य है। १३ सो तुम जाकर इसका अर्थ सीख लो, कि मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूं, क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं॥

उपवास रखना

१४ तब यूहन्ना के चेलों ने उसके पास आकर कहा; क्या कारण है कि हम और फरीसी इतना उपवास करते हैं, पर तेरे चेले उपवास नहीं करते? १५ यीशु ने उन से कहा; क्या बराती, जब तक दूलहा उनके साथ है शोक कर सकते हैं? पर वे दिन आएंगे कि दूलहा उन से अलग किया जाएगा, उस समय वे उपवास करेंगे। १६ कोरे कपड़े का पैवन्द पुराने पहिरावन पर कोई नहीं लगाता, क्योंकि वह पैवन्द पहिरावन से और कुछ खींच लेता है, और वह अधिक फट जाता है। १७ और नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरते हैं; क्योंकि ऐसा करने से मशकें फट जाती हैं, और दाखरस बह जाता है और मशकें नाश हो जाती हैं, परन्तु नया दाखरस नई मशकों में भरते हैं और वह दोनों बची रहती हैं॥

याईर की बेटी और वह स्त्री जिसे लोहू बहने का रोग था

१८ वह उन से ये बातें कह ही रहा था, कि देखो, एक सरदार ने आकर उसे प्रणाम किया और कहा मेरी पुत्री अभी मरी है; परन्तु चलकर अपना हाथ उस पर रख, तो वह जीवित हो जाएगी। १९ यीशु उठकर अपने चेलों समेत उसके पीछे हो लिया। २० और देखो, एक स्त्री ने जिसके बारह वर्ष से लोहू बहता था, उसके पीछे से आकर उसके वस्त्र के आंचल को छू लिया। २१ क्योंकि वह अपने मन में कहती थी कि यदि मैं उसके वस्त्र ही को छू लूंगी तो चंगी हो जाऊंगी। २२ यीशु ने फिरकर उसे देखा, और कहा; पुत्री ढाढ़स बान्ध, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा किया है; सो वह स्त्री उसी घड़ी चंगी हो गई। २३ जब यीशु उस सरदार के घर पहुंचा और बांसली बजानेवालों और भीड़ को हुल्लड़ मचाते देखा तब कहा। २४ हट जाओ, लड़की मरी नहीं, पर सोती है; इस पर वे उसकी हंसी करने लगे। २५ परन्तु जब भीड़ निकाल दी गई, तो उस ने भीतर जाकर लड़की का हाथ पकड़ा, और वह जी उठी। २६ और इस बात की चर्चा उस सारे देश में फैल गई॥

दो अन्धे मनुष्य

२७ जब यीशु वहां से आगे बढ़ा, तो दो अन्धे उसके पीछे यह पुकारते हुए चले, कि हे दाऊद की सन्तान, हम पर दया कर। २८ जब वह घर में पहुंचा, तो वे अन्धे उसके पास आए; और यीशु ने उन से कहा; क्या तुम्हें विश्वास है, कि मैं यह कर सकता हूं? उन्हों ने उस से कहा; हां, प्रभु। २९ तब उस ने उनकी आंखें छूकर कहा, तुम्हारे विश्वास के अनुसार तुम्हारे लिये हो। ३० और उनकी आंखें खुल गई और यीशु ने उन्हें चिताकर कहा; सावधान, कोई इस बात को न जाने। ३१ पर उन्हों ने निकलकर सारे देश में उसका यश फैला दिया॥

एक गूंगा दुष्टात्मा से ग्रसित

३२ जब वे बाहर जा रहे थे, तो देखो, लोग एक गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी उसके पास लाए। ३३ और जब दुष्टात्मा निकाल दी गई, तो गूंगा बोलने लगा; और भीड़ ने अचम्भा करके कहा कि इस्राएल में ऐसा कभी नहीं देखा गया। ३४ परन्तु फरीसियों ने कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता है॥

३५ और यीशु सब नगरों और गांवों में फिरता रहा और उनकी सभाओं में उपदेश करता, और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा॥

मसीह का जनता पर तरस खाना

३६ जब उस ने भीड़ को देखा तो उसको लोगों पर तरस आया, क्योंकि वे उन भेड़ों की नाईं जिनका कोई रखवाला न हो, व्याकुल और भटके हुए से थे। ३७ तब उस ने अपने चेलों से कहा, पक्के खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं। ३८ इसलिये खेत के स्वामी से बिनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे॥

बारह चेले और उनका कर्त्तव्य

१० फिर उस ने अपने बारह चेलों को पास बुलाकर, उन्हें अशुद्ध आत्माओं पर अधिकार दिया, कि उन्हें निकालें, और सब प्रकार की बीमारियों और सब प्रकार की दुर्बलताओं को दूर करें॥

२ और बारह प्रेरितों के नाम ये हैं। पहिला, शमौन जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास; जबदी का पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना; ३ फिलिप्पुस और बरतुल्मै, थोमा और महसूल लेनेवाला मत्ती, हलफै का पुत्र याकूब और तद्दै। ४ शमौन कनानी, और यहूदा इस्करियोती, जिस ने उसे पकड़वा भी दिया॥

५ इन बारहों को यीशु ने यह आज्ञा देकर भेजा कि अन्यजातियों की ओर न जाना, और सामरियों के किसी नगर में प्रवेश न करना। ६ परन्तु

इस्राएल के घराने ही की खोई हुई भेड़ों के पास जाना। ७ और चलते चलते प्रचार कर कहो कि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है। ८ बीमारों को चंगा करो : मरे हुओं को जिलाओ : कोढ़ियों को शुद्ध करो : दुष्टात्माओं को निकालो : तुम ने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो। ९ अपने पटुकों में न तो सोना, और न रूपा, और न तांबा रखना। १० मार्ग के लिये न झोली रखो, न दो कुरते, न जूते और न लाठी लो, क्योंकि मजदूर को उसका भोजन मिलना चाहिये। ११ जिस किसी नगर या गांव में जाओ, तो पता लगाओ कि वहां कौन योग्य है? और जब तक वहां से न निकलो, उसी के यहां रहो। १२ और घर में प्रवेश करते हुये उसको आशीष देना। १३ यदि उस घर के लोग योग्य होंगे तो तुम्हारा कल्याण उन पर पहुंचेगा परन्तु यदि वे योग्य न हों तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे पास लौट आएगा। १४ और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे, और तुम्हारी बातें न सुने, उस घर या उस नगर से निकलते हुए अपने पांवों की धूल झाड़ डालो। १५ मैं तुम से सच कहता हूं, कि न्याय के दिन उस नगर की दशा से सदोम और अमोरा के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी॥

१६ देखो, मैं तुम्हें भेड़ों की नाईं भेड़ियों के बीच में भेजता हूं सो सांपों की नाईं बुद्धिमान और कबूतरों की नाईं भोले बनो। १७ परन्तु लोगों से सावधान रहो, क्योंकि वे तुम्हें महा सभाओं में सौंपेंगे, और अपनी पंचायतों में तुम्हें कोड़े मारेंगे। १८ तुम मेरे लिये हाकिमों और राजाओं के साम्हने उन पर, और अन्यजातियों पर गवाह होने के लिये पहुंचाए जाओगे। १९ परन्तु जब वे तुम्हें पकड़वाएंगे तो यह चिन्ता न करना, कि हम किस रीति से, या क्या होंगे : क्योंकि जो कुछ तुम को कहना होगा, वह उसी घड़ी तुम्हें बता दिया जाएगा। २० क्योंकि बोलनेवाले तुम नहीं हो परन्तु तुम्हारे पिता का आत्मा तुम में बोलता है। २१ भाई, भाई को और पिता पुत्र को, घात के लिये सौंपेंगे, और लड़के-बाले माता-पिता के विरोध में उठकर उन्हें मरवा डालेंगे। २२ मेरे नाम के कारण सब लोग तुम से बैर करेंगे, पर जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा उसी का उद्धार होगा। २३ जब वे तुम्हें एक नगर में सताएं, तो दूसरे को भाग

जाना। मैं तुम से सच कहता हूं, तुम इस्राएल के सब नगरों में न फिर चुकोगे, कि मनुष्य का पुत्र आ जाएगा॥

२४ चेला अपने गुरू से बड़ा नहीं, और न दास अपने स्वामी से। २५ चेले का गुरू के, और दास का स्वामी के बराबर होना ही बहुत है; जब उन्होंने घर के स्वामी को शैतान कहा तो उसके घरवालों को क्यों न कहेंगे? २६ सो उन से मत डरना, क्योंकि कुछ ढपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा। २७ जो मैं तुम से अन्धियारे में कहता हूं, उसे उजियाले में कहो; और जो कानों कान सुनते हो, उसे कोठों पर से प्रचार करो। २८ जो शरीर को घात करते हैं, पर आत्मा को घात नहीं कर सकते, उन से मत डरना; पर उसी से डरो, जो आत्मा और शरीर दोनों को नरक में नाश कर सकता है। २९ क्या पैसे में दो गौरैये नहीं बिकतीं? तौभी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उन में से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। ३० तुम्हारे सिर के बाल भी सब गिने हुए हैं। ३१ इसलिये, डरो नहीं; तुम बहुत गौरैयों से बढ़कर हो। ३२ जो कोई मनुष्यों के साम्हने मुझे मान लेगा, उसे मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने मान लूंगा। ३३ पर जो कोई मनुष्यों के साम्हने मेरा इन्कार करेगा उस से मैं भी अपने स्वर्गीय पिता के साम्हने इन्कार करूंगा। ३४ यह न समझो, कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं; मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूं। ३५ मैं तो आया हूं, कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी मां से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं। ३६ मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे। ३७ जो माता या पिता को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं; और जो बेटा या बेटी को मुझ से अधिक प्रिय जानता है, वह मेरे योग्य नहीं। ३८ और जो अपना क्रूस लेकर मेरे पीछे न चले वह मेरे योग्य नहीं। ३९ जो अपने प्राण बचाता है, वह उसे खोएगा; और जो मेरे कारण अपना प्राण खोता है, वह उसे पाएगा। ४० जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजनेवाले को ग्रहण करता है। ४१ जो भविष्यद्वक्ता को भविष्यद्वक्ता जानकर ग्रहण करे, वह भविष्यद्वक्ता का बदला पाएगा; और

जो धर्मी जानकर धर्मी को ग्रहण करे, वह धर्मी का बदला पाएगा। ४२ और जो कोई इन छोटों में से एक को चेला जानकर केवल एक कटोरा ठंडा पानी पिलाए, मैं तुम से सच कहता हूं, वह किसी रीति से अपना प्रतिफल न खोएगा॥

११ जब यीशु अपने बारह चेलों को आज्ञा दे चुका, तो वह उनके नगरों में उपदेश और प्रचार करने को वहां से चला गया॥

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला

२ यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उस से यह पूछने भेजा। ३ कि क्या आनेवाला तू ही है: या हम दूसरे की बाट जोहें? ४ यीशु ने उत्तर दिया, कि जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो। ५ कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। ६ और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए। ७ जब वे वहां से चल दिए, तो यीशु यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगा; तुम जंगल में क्या देखने गये थे? ८ क्या हवा से हिलते हुए सरकण्डे को? फिर तुम क्या देखने गये थे? क्या कोमल वस्त्र पहिने हुए मनुष्य को? देखो, जो कोमल वस्त्र पहिनते हैं, वे राजभवनों में रहते हैं। ९ तो फिर क्यों गए थे? क्या किसी भविष्यद्वक्ता को देखने को? हां; मैं तुम से कहता हूं, वरन भविष्यद्वक्ता से भी बड़े को। १० यह वही है, जिसके विषय में लिखा है कि देख; मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूं, जो तेरे आगे तेरा मार्ग तैयार करेगा। ११ मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उन में से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से कोई बड़ा नहीं हुआ; पर जो स्वर्ग के राज्य में छोटे से छोटा है वह उस से बड़ा है। १२ यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के दिनों से अब तक स्वर्ग के राज्य पर जोर होता रहा है, और बलवान उसे छीन लेते हैं। १३ यूहन्ना तक सारे भविष्यद्वक्ता और व्यवस्था भविष्यद्वाणी करते रहे। १४ और चाहो तो मानो, एलिय्याह जो आनेवाला

था, वह यही है। १५ जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले। मैं इस समय के लोगों की उपमा किस से दूं? १६ वे उन बालकों के समान हैं, जो बाजारों में बैठे हुए एक दूसरे से पुकारकर कहते हैं। १७ कि हम ने तुम्हारे लिये बांसली बजाई, और तुम न नाचे; हम ने विलाप किया, और तुम ने छाती नहीं पीटी। १८ क्योंकि यूहन्ना न खाता आया और न पीता, और वे कहते हैं कि उस में दुष्टात्मा है। १९ मनुष्य का पुत्र खाता-पीता आया, और वे कहते हैं कि देखो, पेटू और पियक्कड़ मनुष्य, महसूल लेने-वालों और पापियों का मित्र; पर ज्ञान अपने कामों से सच्चा ठहराया गया है॥

अविश्‍वासी नगरों पर सन्ताप

२० तब वह उन नगरों को उलाहना देने लगा, जिन में उस ने बहुतेरे सामर्थ्य के काम किए थे; क्योंकि उन्हों ने अपना मन नहीं फिराया था। २१ हाय, खुराजीन; हाय, बैतसैदा; जो सामर्थ्य के काम तुम में किए गए, यदि वे सूर और सैदा में किए जाते, तो टाट ओढ़कर, और राख में बैठकर, वे कब के मन फिरा लेते। २२ परन्तु मैं तुम से कहता हूं; कि न्याय के दिन तुम्हारी दशा से सूर और सैदा की दशा अधिक सहने योग्य होगी। २३ और हे कफरनहूम, क्या तू स्वर्ग तक ऊंचा किया जायेगा? तू तो अधोलोक तक नीचे जायेगा; क्योंकि जो सामर्थ्य के काम तुझ में किये गए हैं, यदि सदोम में किए जाते, तो वह आज तक बना रहता। २४ पर मैं तुम से कहता हूं, कि न्याय के दिन तेरी दशा से सदोम के देश की दशा अधिक सहने योग्य होगी॥

बच्चों का सा मन

२५ उसी समय यीशु ने कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु; मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है। २६ हां, हे पिता, क्योंकि तुझे यही अच्छा लगा॥

यीशु का नियुक्त कर्त्तव्य

२७ मेरे पिता ने मुझे सब कुछ सौंपा है, और कोई पुत्र को नहीं जानता, केवल पिता; और कोई पिता को नहीं जानता, केवल पुत्र; और वह जिस पर पुत्र उसे प्रगट करना चाहे। २८ हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुये लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। २९ मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो; और मुझ से सीखो; क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं: और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। ३० क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है॥

सब्त के दिन का मानना

१२ उस समय यीशु सब्त के दिन खेतों में से होकर जा रहा था, और उसके चेलों को भूख लगी, सो वे बालें तोड़ तोड़कर खाने लगे। २ फरीसियों ने यह देखकर उस से कहा, देख, तेरे चेले वह काम कर रहे हैं, जो सब्त के दिन करना उचित नहीं। ३ उस ने उन से कहा; क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि दाऊद ने, जब वह और उसके साथी भूखे हुए तो क्या किया? ४ वह क्योंकर परमेश्वर के घर में गया, और भेंट की रोटियां खाईं, जिन्हें खाना न तो उसे और न उसके साथियों को, पर केवल याजकों को उचित था? ५ या तुम ने व्यवस्था में नहीं पढ़ा, कि याजक सब्त के दिन मन्दिर में सब्त के दिन की विधि को तोड़ने पर भी निर्दोष ठहरते हैं। ६ पर मैं तुम से कहता हूं, कि यहां वह है, जो मन्दिर से भी बड़ा है। ७ यदि तुम इसका अर्थ जानते कि मैं दया से प्रसन्न हूं, बलिदान से नहीं, तो तुम निर्दोष को दोषी न ठहराते। ८ मनुष्य का पुत्र तो सब्त के दिन का भी प्रभु है॥

सूखे हाथ वाले का चंगा होना

९ वहां से चलकर वह उनकी सभा के घर में आया। १० और देखो, एक मनुष्य था, जिसका हाथ सूखा हुआ था; और उन्हों ने उस पर दोष लगाने के लिये उस से पूछा, कि क्या सब्त के दिन चंगा करना

उचित है? ११ उस ने उस से कहा; तुम में ऐसा कौन है, जिसकी एक ही भेड़ हो, और वह सब्त के दिन गड़हे में गिर जाए, तो वह उसे पकड़कर न निकाले। १२ भला, मनुष्य का मूल्य भेड़ से कितना बढ़ कर है; इसलिये सब्त के दिन भलाई करना उचित है: १३ तब उस ने उस मनुष्य से कहा, अपना हाथ बढ़ा: उस ने बढ़ाया, और वह फिर दूसरे हाथ की नाईं अच्छा हो गया॥

यीशु के मार डालने का षडयन्त्र

१४ तब फरीसियों ने बाहर जाकर उसके विरोध में सम्मति की, कि उसे किस प्रकार नाश करें? १५ यह जानकर यीशु वहां से चला गया; और बहुत लोग उसके पीछे हो लिए; और उस ने सब को चंगा किया। १६ और उन्हें चिताया, कि मुझे प्रगट न करना। १७ कि जो वचन यशायाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो। १८ कि देखो, यह मेरा सेवक है, जिसे मैं ने चुना है; मेरा प्रिय, जिस से मेरा मन प्रसन्न है: मैं अपना आत्मा उस पर डालूंगा; और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा। १९ वह न झगड़ा करेगा, और न धूम मचाएगा; और न बाजारों में कोई उसका शब्द सुनेगा। २० वह कुचले हुए सरकण्डे को न तोड़ेगा; और धुआं देती हुई बत्ती को न बुझाएगा, जब तक न्याय को प्रबल न कराए। २१ और अन्यजातियां उसके नाम पर आशा रखेंगी॥

यीशु पर दोष लगाया जाना कि वह शैतान की सहायता से काम करता है—और यीशु का उत्तर

२२ तब लोग एक अन्धे-गूंगे को जिस में दुष्टात्मा थी, उसके पास लाए; और उस ने उसे अच्छा किया; और वह गूंगा बोलने और देखने लगा। २३ इस पर सब लोग चकित होकर कहने लगे, यह क्या दाऊद की सन्तान का है? २४ परन्तु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं

निकालता। २५ उस ने उनके मन की बात जानकर उन से कहा; जिस किसी राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा। २६ और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य क्योंकर बना रहेगा? २७ भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिये वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे। २८ पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है। २९ या क्योंकर कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल लूट सकता है जब तक कि पहिले उस बलवन्त को न बान्ध ले? और तब वह उसका घर लूट लेगा। ३० जो मेरे साथ नहीं, वह मेरे विरोध में है; और जो मेरे साथ नहीं बटोरता, वह बिथराता है। ३१ इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि मनुष्य का सब प्रकार का पाप और निन्दा क्षमा की जाएगी, पर आत्मा की निन्दा क्षमा न की जाएगी। ३२ जो कोई मनुष्य के पुत्र के विरोध में कोई बात कहेगा, उसका यह अपराध क्षमा किया जाएगा, परन्तु जो कोई पवित्र-आत्मा के विरोध में कुछ कहेगा, तो उसका अपराध न तो इस लोक में और न परलोक में क्षमा किया जाएगा। ३३ यदि पेड़ को अच्छा कहो, तो उसके फल को भी अच्छा कहो; या पेड़ को निकम्मा कहो; तो उसके फल को भी निकम्मा कहो; क्योंकि पेड़ फल ही से पहचाना जाता है। ३४ हे सांप के बच्चो, तुम बुरे होकर क्योंकर अच्छी बातें कह सकते हो? क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है। ३५ भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है; और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है। ३६ और मैं तुम से कहता हूं, कि जो जो निकम्मी बातें मनुष्य कहेंगे, न्याय के दिन हर एक बात का लेखा देंगे। ३७ क्योंकि तू अपनी बातों के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जाएगा॥

चिन्ह की मांग का इन्कार

३८ इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने उस से कहा, हे गुरु, हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं। ३९ उस ने उन्हें उत्तर दिया, कि इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं; परन्तु यूनुस भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उनको न दिया जाएगा। ४० यूनुस तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा। ४१ नीनवे के लोग न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएंगे, क्योंकि उन्हों ने यूनुस का प्रचार सुनकर, मन फिराया और देखो, यहां वह है जो यूनुस से भी बड़ा है। ४२ दक्खिन की रानी न्याय के दिन इस युग के लोगों के साथ उठकर उन्हें दोषी ठहराएगी; क्योंकि वह सुलैमान का ज्ञान सुनने के लिये पृथ्वी की छोर से आई, और देखो, यहां वह है जो सुलैमान से भी बड़ा है॥

अपूर्ण सुधार का खतरा

४३ जब अशुद्ध आत्मा मनुष्य में से निकल जाती है, तो सूखी जगहों में विश्राम ढूंढ़ती फिरती है और पाती नहीं। ४४ तब कहती है, कि मैं अपने उसी घर में जहां से निकली थी, लौट जाऊंगी, और आकर उसे सूना, झाड़ा-बुहारा और सजा-सजाया पाती है। ४५ तब वह जाकर अपने से और बुरी सात आत्माओं को अपने साथ ले आती है, और वे उस में पैठकर वहां बास करती हैं, और उस मनुष्य की पिछली दशा पहिले से भी बुरी हो जाती है; इस युग के बुरे लोगों की दशा भी ऐसी ही होगी॥

सत्य भाईचारे का व्यवहार

४६ जब वह भीड़ से बातें कर ही रहा था, तो देखो, उसकी माता और भाई बाहर खड़े थे, और उस से बातें करना चाहते थे। ४७ किसी ने उस से कहा; देख तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं, और तुझ

से बातें करना चाहते हैं। ४८ यह सुन उस ने कहनेवाले को उत्तर दिया; कौन है मेरी माता? और कौन हैं मेरे भाई? ४९ और अपने चेलों की ओर अपना हाथ बढ़ाकर कहा; देखो; मेरी माता और मेरे भाई ये हैं। ५० क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहिन और माता है।।

बीज बोनेवाले का दृष्टान्त

१३ उसी दिन यीशु घर से निकलकर झील के किनारे जा बैठा। २ और उसके पास ऐसी बड़ी भीड़ इकट्ठी हुई कि वह नाव पर चढ़ गया, और सारी भीड़ किनारे पर खड़ी रही। ३ और उस ने उन से दृष्टान्तों में बहुत सी बातें कहीं, कि देखो, एक बोनेवाला बीज बोने निकला। ४ बोते समय कुछ बीज मार्ग के किनारे गिरे और पक्षियों ने आकर उन्हें चुग लिया। ५ कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरे, जहां उन्हें बहुत मिट्टी न मिली और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण वे जल्द उग आए। ६ पर सूरज निकलने पर वे जल गए; और जड़ न पकड़ने से सूख गए। ७ कुछ झाड़ियों में गिरे, और झाड़ियों ने बढ़कर उन्हें दबा डाला। ८ पर कुछ अच्छी भूमि पर गिरे, और फल लाए, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना। ९ जिसके कान हों वह सुन ले।।

दृष्टान्तों का प्रयोग

१० और चेलों ने पास आकर उस से कहा, तू उन से दृष्टान्तों में क्यों बातें करता है। ११ उस ने उत्तर दिया, कि तुम को स्वर्ग के राज्य के भेदों की समझ दी गई है, पर उनको नहीं। १२ क्योंकि जिसके पास है, उसे दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जायगा; पर जिसके पास कुछ नहीं है, उस से जो कुछ उसके पास है, वह भी ले लिया जायगा। १३ मैं उन से दृष्टान्तों में इसलिये बातें करता हूं, कि वे देखते हुये नहीं देखते; और सुनते हुये नहीं सुनते; और नहीं समझते। १४ और उनके विषय में यशायाह की यह भविष्यद्वाणी पूरी होती है, कि तुम कानों

से तो सुनोगे, पर समझोगे नहीं; और आंखों से तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा। १५ क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं और उन्हों ने अपनी आंखें मूंद ली हैं, कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएं, और मैं उन्हें चंगा करूं। १६ पर धन्य है तुम्हारी आंखें, कि वे देखती हैं; और तुम्हारे कान, कि वे सुनते हैं। १७ क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं ने और धर्मियों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो, देखें, पर न देखीं; और जो बातें तुम सुनते हो, सुनें, पर न सुनीं॥

बीज बोनेवाले के दृष्टान्त की व्याख्या

१८ सो तुम बोनेवाले का दृष्टान्त सुनो। १९ जो कोई राज्य का वचन सुनकर नहीं समझता, उसके मन में जो कुछ बोया गया था, उसे वह दुष्ट आकर छीन ले जाता है; यह वही है, जो मार्ग के किनारे बोया गया था। २० और जो पत्थरीली भूमि पर बोया गया, यह वह है, जो वचन सुनकर तुरन्त आनन्द के साथ मान लेता है। २१ पर अपने में जड़ न रखने के कारण वह थोड़े ही दिन का है, और जब वचन के कारण क्लेश या उपद्रव होता है, तो तुरन्त ठोकर खाता है। २२ जो झाड़ियों में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनता है, पर इस संसार की चिन्ता और धन का धोखा वचन को दबाता है, और वह फल नहीं लाता। २३ जो अच्छी भूमि में बोया गया, यह वह है, जो वचन को सुनकर समझता है, और फल लाता है, कोई सौ गुना, कोई साठ गुना, कोई तीस गुना॥

जंगली दानों का दृष्टान्त

२४ उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्ग का राज्य उस मनुष्य के समान है, जिस ने अपने खेत में अच्छा बीज बोया। २५ पर जब लोग सो रहे थे तो उसका बैरी आकर गेहूं के बीच जंगली बीज बोकर चला गया। २६ जब अंकुर निकले और बालें लगीं, तो जंगली दाने भी दिखाई

दिए। २७ इस पर गृहस्थ के दासों ने आकर उस से कहा, हे स्वामी, क्या तू ने अपने खेत में अच्छा बीज न बोया था? फिर जंगली दाने के पौधे उस में कहां से आए? २८ उस ने उन से कहा, यह किसी बैरी का काम है। दासों ने उस से कहा, क्या तेरी इच्छा है, कि हम जाकर उनको बटोर लें? २९ उस ने कहा, ऐसा नहीं; न हो कि जंगली दाने के पौधे बटोरते हुए उनके साथ गेहूं भी उखाड़ लो। ३० कटनी तक दोनों को एक साथ बढ़ने दो, और कटनी के समय मैं काटनेवालों से कहूंगा; पहिले जंगली दाने के पौधे बटोरकर जलाने के लिये उनके गट्ठे बान्ध लो, और गेहूं को मेरे खत्ते में इकट्ठा करो॥

राई के दाने और ख़मीर का दृष्टान्त

३१ उस ने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया; कि स्वर्ग का राज्य राई के एक दाने के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने लेकर अपने खेत में बो दिया। ३२ वह सब बीजों से छोटा तो है पर जब बढ़ जाता है तब सब साग पात से बड़ा होता है; और ऐसा पेड़ हो जाता है, कि आकाश के पक्षी आकर उसकी डालियों पर बसेरा करते हैं॥

३३ उस ने एक और दृष्टान्त उन्हें सुनाया; कि स्वर्ग का राज्य ख़मीर के समान है जिसको किसी स्त्री ने लेकर तीन पसेरी आटे में मिला दिया और होते होते वह सब ख़मीर हो गया॥

३४ ये सब बातें यीशु ने दृष्टान्तों में लोगों से कहीं, और बिना दृष्टान्त वह उन से कुछ न कहता था। ३५ कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो कि मैं दृष्टान्त कहने को अपना मुंह खोलूंगा: मैं उन बातों को जो जगत की उत्पत्ति से गुप्त रहीं हैं प्रगट करूंगा॥

जंगली पौधों के दृष्टान्त की व्याख्या

३६ तब वह भीड़ को छोड़कर घर में आया, और उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा, खेत के जंगली दाने का दृष्टान्त हमें समझा दे। ३७ उस ने उनको उत्तर दिया, कि अच्छे बीज का बोनेवाला मनुष्य का

पुत्र है। ३८ खेत संसार है, अच्छा बीज राज्य के सन्तान, और जंगली बीज दुष्ट के सन्तान हैं। ३९ जिस बैरी ने उनको बोया वह शैतान है; कटनी जगत का अन्त है: और काटनेवाले स्वर्गदूत हैं। ४० सो जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और जलाए जाते हैं वैसा ही जगत के अन्त में होगा। ४१ मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों को भेजेगा, और वे उसके राज्य में से सब ठोकर के कारणों को और कुकर्म करनेवालों को इकट्ठा करेंगे। ४२ और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे, वहां रोना और दांत पीसना होगा। ४३ उस समय धर्मी अपने पिता के राज्य में सूर्य की नाईं चमकेंगे: जिसके कान हों वह सुन ले॥

मोती, धन और जाल के दृष्टान्त

४४ स्वर्ग का राज्य खेत में छिपे हुए धन के समान है, जिसे किसी मनुष्य ने पाकर छिपा दिया, और मारे आनन्द के जाकर और अपना सब कुछ बेचकर उस खेत को मोल ले लिया॥

४५ फिर स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है जो अच्छे मोतियों की खोज में था। ४६ जब उसे एक बहुमूल्य मोती मिला तो उस ने जाकर अपना सब कुछ बेच डाला और उसे मोल ले लिया॥

४७ फिर स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है, जो समुद्र में डाला गया, और हर प्रकार की मछलियों को समेट लाया। ४८ और जब भर गया, तो उसको किनारे पर खींच लाए, और बैठकर अच्छी अच्छी तो बरतनों में इकट्ठा किया और निकम्मी, निकम्मी फेंक दीं। ४९ जगत के अन्त में ऐसा ही होगा: स्वर्गदूत आकर दुष्टों को धर्मियों से अलग करेंगे, और उन्हें आग के कुंड में डालेंगे। ५० वहां रोना और दांत पीसना होगा॥

५१ क्या तुम ने ये सब बातें समझीं? ५२ उन्हों ने उस से कहा, हां; उस ने उन से कहा, इसलिये हर एक शास्त्री जो स्वर्ग के राज्य का चेला बना है, उस गृहस्थ के समान है जो अपने भण्डार से नई और पुरानी वस्तुएं निकालता है॥

नासरत में यीशु का तिरस्कार

५३ जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका, तो वहां से चला गया। ५४ और अपने देश में आकर उनकी सभा में उन्हें ऐसा उपदेश देने लगा; कि वे चकित होकर कहने लगे; कि इसको यह ज्ञान और सामर्थ्य के काम कहां से मिले? ५५ क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं? और क्या इसकी माता का नाम मरियम और इसके भाइयों के नाम याकूब और यूसुफ और शमौन और यहूदा नहीं? और क्या इसकी सब बहिनें हमारे बीच में नहीं रहतीं? ५६ फिर इसको यह सब कहां से मिला? ५७ सो उन्हों ने उसके कारण ठोकर खाई, पर यीशु ने उन से कहा, भविष्यद्वक्ता अपने देश और अपने घर को छोड़ और कहीं निरादर नहीं होता। ५८ और उस ने वहां उनके अविश्वास के कारण बहुत सामर्थ्य के काम नहीं किए॥

यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की मृत्यु

१४ उस समय चौथाई देश के राजा हेरोदेस ने यीशु की चर्चा सुनी। २ और अपने सेवकों से कहा, यह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला है: वह मरे हुओं में से जी उठा है, इसी लिये उस से सामर्थ्य के काम प्रगट होते हैं। ३ क्योंकि हेरोदेस ने अपने भाई फिलिप्पुस की पत्नी हेरोदियास के कारण, यूहन्ना को पकड़कर बान्धा, और जेलखाने में डाल दिया था। ४ क्योंकि यूहन्ना ने उस से कहा था, कि इसको रखना तुझे उचित नहीं है। ५ और वह उसे मार डालना चाहता था, पर लोगों से डरता था, क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे। ६ पर जब हेरोदेस का जन्म दिन आया, तो हेरोदियास की बेटी ने उत्सव में नाच दिखाकर हेरोदेस को खुश किया। ७ इसलिये उस ने शपथ खाकर वचन दिया, कि जो कुछ तू मांगेगी, मैं तुझे दूंगा। ८ वह अपनी माता की उस्काई हुई बोली, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का सिर थाल में यहीं मुझे मंगवा दे। ९ राजा दुखित हुआ, पर अपनी शपथ के, और साथ बैठनेवालों के कारण, आज्ञा दी, कि दे दिया जाए। १० और जेलखाने में लोगों को भेजकर यूहन्ना का सिर कटवा दिया। ११ और उसका सिर थाल

में लाया गया, और लड़की को दिया गया; और वह उसको अपनी मां के पास ले गई। १२ और उसके चेलों ने आकर और उसकी लोथ को ले जाकर गाड़ दिया और जाकर यीशु को समाचार दिया॥

पांच हजार को खिलाना

१३ जब यीशु ने यह सुना, तो नाव पर चढ़कर वहां से किसी सुनसान जगह एकान्त में चला गया; और लोग यह सुनकर नगर नगर से पैदल उसके पीछे हो लिए। १४ उस ने निकलकर बड़ी भीड़ देखी; और उन पर तरस खाया; और उस ने उनके बीमारों को चंगा किया। १५ जब सांझ हुई, तो उसके चेलों ने उसके पास आकर कहा; यह तो सुनसान जगह है, और देर हो रही है, लोगों को बिदा किया जाए कि वे बस्तियों में जाकर अपने लिये भोजन मोल लें। १६ यीशु ने उन से कहा, उनका जाना आवश्यक नहीं! तुम ही इन्हें खाने को दो। १७ उन्हों ने उस से कहा; यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है। १८ उस ने कहा, उनको यहां मेरे पास ले आओ। १९ तब उस ने लोगों को घास पर बैठने को कहा, और उन पांच रोटियों और दो मछलियों को लिया; और स्वर्ग की ओर देखकर धन्यवाद किया और रोटियां तोड़ तोड़ कर चेलों को दीं, और चेलों ने लोगों को। २० और सब खाकर तृप्त हो गए, और उन्हों ने बचे हुए टुकड़ों से भरी हुई बारह टोकरियां उठाईं। २१ और खानेवाले स्त्रियों और बालकों को छोड़कर पांच हजार पुरुषों के अटकल थे॥

यीशु का पानी पर चलना

२२ और उस ने तुरन्त अपने चेलों को बरबस नाव पर चढ़ाया, कि वे उस से पहिले पार चले जाएं, जब तक कि वह लोगों को बिदा करे। २३ वह लोगों को बिदा करके, प्रार्थना करने को अलग पहाड़ पर चढ़ गया; और सांझ को वहां अकेला था। २४ उस समय नाव झील के बीच लहरों से डगमगा रही थी, क्योंकि हवा साम्हने की थी। २५ और

वह रात के चौथे पहर झील पर चलते हुए उनके पास आया। २६ चेले उसको झील पर चलते हुए देखकर घबरा गए! और कहने लगे, वह भूत है; और डर के मारे चिल्ला उठे। २७ यीशु ने तुरन्त उन से बातें कीं, और कहा; ढाढ़स बान्धो; मैं हूं; डरो मत। २८ पतरस ने उसको उत्तर दिया, हे प्रभु, यदि तू ही है, तो मुझे अपने पास पानी पर चलकर आने की आज्ञा दे। २९ उस ने कहा, आ: तब पतरस नाव पर से उतर कर यीशु के पास जाने को पानी पर चलने लगा। ३० पर हवा को देख कर डर गया, और जब डूबने लगा, तो चिल्लाकर कहा; हे प्रभु, मुझे बचा। ३१ यीशु ने तुरन्त हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया, और उस से कहा, हे अल्प-विश्वासी, तू ने क्यों सन्देह किया? ३२ जब वे नाव पर चढ़ गए, तो हवा थम गई। ३३ इस पर जो नाव पर थे, उन्हों ने उसे दण्डवत करके कहा, सचमुच तू परमेश्वर का पुत्र है॥

३४ वे पार उतरकर गन्नेसरत देश में पहुंचे। ३५ और वहां के लोगों ने उसे पहचानकर आस पास के सारे देश में कहला भेजा, और सब बीमारों को उसके पास लाए। ३६ और उस से बिनती करने लगे, कि उन्हें अपने वस्त्र के आंचल ही को छूने दे: और जितनों ने उसे छूआ, वे चंगे हो गए॥

धार्मिक विधियों को पूरा न करने की समालोचना पर यीशु का प्रत्युत्तर

१५ तब यरूशलेम से कितने फरीसी और शास्त्री यीशु के पास आकर कहने लगे। २ तेरे चेले पुरनियों की रीतों को क्यों टालते हैं, कि बिना हाथ धोए रोटी खाते हैं? ३ उस ने उनको उत्तर दिया, कि तुम भी अपनी रीतों के कारण क्यों परमेश्वर की आज्ञा टालते हो? ४ क्योंकि परमेश्वर ने कहा था, कि अपने पिता और अपनी माता का आदर करना: और जो कोई पिता या माता को बुरा कहे, वह मार डाला जाए। ५ पर तुम कहते हो, कि यदि कोई अपने पिता या माता से कहे, कि जो कुछ तुझे मुझ से लाभ पहुंच सकता था, वह परमेश्वर को भेंट

चढ़ाई जा चुकी। ६ तो वह अपने पिता का आदर न करे, सो तुम ने अपनी रीतों के कारण परमेश्वर का वचन टाल दिया। ७ हे कपटियो, यशायाह ने तुम्हारे विषय में यह भविष्यद्वाणी ठीक की। ८ कि ये लोग होठों से तो मेरा आदर करते हैं, पर उनका मन मुझ से दूर रहता है। ९ और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं। १० और उस ने लोगों को अपने पास बुलाकर उन से कहा, सुनो; और समझो। ११ जो मुंह में जाता है, वह मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता, पर जो मुंह से निकलता है, वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। १२ तब चेलों ने आकर उस से कहा, क्या तू जानता है कि फरीसियों ने यह वचन सुनकर ठोकर खाई? १३ उस ने उत्तर दिया. हर पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, उखाड़ा जाएगा। १४ उनको जाने दो; वे अन्धे मार्ग दिखलानेवाले हैं: और अन्धा यदि अन्धे को मार्ग दिखाए, तो दोनों गड़हे में गिर पड़ेंगे। १५ यह सुनकर, पतरस ने उस से कहा, यह दृष्टान्त हमें समझा दे। १६ उस ने कहा, क्या तुम भी अब तक नासमझ हो? १७ क्या नहीं समझते, कि जो कुछ मुंह में जाता है, वह पेट में पड़ता है, और सण्डास में निकल जाता है? १८ पर जो कुछ मुंह से निकलता है, वह मन से निकलता है, और वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। १९ क्योंकि कुचिन्ता, हत्या, परस्त्रीगमन, व्यभिचार, चोरी, झूठी गवाही और निन्दा मन ही से निकलती हैं। २० ये ही बातें हैं जो मनुष्य को अशुद्ध करती हैं, परन्तु हाथ बिना धोए भोजन करना मनुष्य को अशुद्ध नहीं करता॥

अन्यजाति की लड़की का चंगा किया जाना।

२१ यीशु वहां से निकलकर, सूर और सैदा के देशों की ओर चला गया। २२ और देखो, उस देश से एक कनानी स्त्री निकली, और चिल्लाकर कहने लगी; हे प्रभु दाऊद के सन्तान, मुझ पर दया कर, मेरी बेटी को दुष्टात्मा बहुत सता रहा है। २३ पर उस ने उसे कुछ उत्तर न दिया, और उसके चेलों ने आकर उस से बिनती कर कहा; इसे बिदा कर; क्योंकि वह हमारे पीछे चिल्लाती आती है। २४ उस ने उत्तर दिया,

कि इस्राएल के घराने की खोई हुई भेड़ों को छोड़ मैं किसी के पास नहीं भेजा गया। २५ पर वह आई, और उसे प्रणाम करके कहने लगी; हे प्रभु, मेरी सहायता कर। २६ उस ने उत्तर दिया, कि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों के आगे डालना अच्छा नहीं। २७ उस ने कहा, सत्य है प्रभु; पर कुत्ते भी वह चूरचार खाते हैं, जो उनके स्वामियों की मेज़ से गिरते हैं। २८ इस पर यीशु ने उसको उत्तर देकर कहा, कि हे स्त्री तेरा विश्वास बड़ा है: जैसा तू चाहती है, तेरे लिये वैसा ही हो; और उसकी बेटी उसी घड़ी से चंगी हो गई॥

अधिकाधिक चंगा हुए

२९ फिर यीशु वहां से चलकर, गलील की झील के पास आया, और पहाड़ पर चढ़कर वहां बैठ गया। ३० और एक बड़ी भीड़ लंगड़ों, अन्धों, गूंगों, टुंडों और बहुत औरों को लेकर उसके पास आई; और उन्हें उसके पांवों पर डाल दिया, और उस ने उन्हें चंगा किया। ३१ सो जब लोगों ने देखा, कि गूंगे बोलते और टुंडे चंगे होते और लंगड़े चलते और अन्धे देखते हैं, तो अचम्भा करके इस्राएल के परमेश्वर की बड़ाई की॥

चार हज़ार का भोज

३२ यीशु ने अपने चेलों को बुलाकर कहा, मुझे इस भीड़ पर तरस आता है; क्योंकि वे तीन दिन से मेरे साथ हैं और उनके पास कुछ खाने को नहीं; और मैं उन्हें भूखा बिदा करना नहीं चाहता; कहीं ऐसा न हो कि मार्ग में थककर रह जाएं। ३३ चेलों ने उस से कहा, हमें इस जंगल में कहां से इतनी रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़ को तृप्त करें? ३४ यीशु ने उन से पूछा, तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं? उन्हों ने कहा; सात और थोड़ी सी छोटी मछलियां। ३५ तब उस ने लोगों को भूमि पर बैठने की आज्ञा दी। ३६ और उन सात रोटियों और मछलियों को ले धन्यवाद करके तोड़ा और अपने चेलों को देता गया; और चेले लोगों को। ३७ सो सब खाकर तृप्त हो गए और बचे हुए टुकड़ों से भरे

हुए सात टोकरे उठाए। ३८ और खानेवाले स्त्रियों और बालकों को छोड़ चार हजार पुरुष थे। ३९ तब वह भीड़ों को बिदा करके नाव पर चढ़ गया, और मगदन देश के सिवानों में आया॥

यीशु ने चिन्ह की विनती अस्वीकार कर दिया

१६ और फरीसियों और सदूकियों ने पास आकर उसे परखने के लिये उस से कहा, कि हमें आकाश का कोई चिन्ह दिखा। २ उस ने उनको उत्तर दिया, कि सांझ को तुम कहते हो कि खुला रहेगा क्योंकि आकाश लाल है। ३ और भोर को कहते हो, कि आज आन्धी आएगी क्योंकि आकाश लाल और धुमला है; तुम आकाश का लक्षण देखकर भेद बता सकते हो पर समयों के चिन्हों का भेद नहीं बता सकते? ४ इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं पर यूनुस के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन्हें न दिया जाएगा, और वह उन्हें छोड़कर चला गया॥

५ और चेले पार जाते समय रोटी लेना भूल गये थे॥

चेलों के अन्धेपन की ताड़ना

६ यीशु ने उन से कहा, देखो; फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना। ७ वे आपस में विचार करने लगे, कि हम तो रोटी नहीं लाए। ८ यह जानकर, यीशु ने उन से कहा, हे अल्प-विश्वासियो, तुम आपस में क्यों विचार करते हो कि हमारे पास रोटी नहीं? ९ क्या तुम अब तक नहीं समझे? और उन पांच हजार की पांच रोटी स्मरण नहीं करते, और न यह कि कितनी टोकरियां उठाई थीं? १० और न उन चार हजार की सात रोटी; और न यह कि कितने टोकरे उठाए गए थे? ११ तुम क्यों नहीं समझते कि मैं ने तुम से रोटियों के विषय में नहीं कहा? फरीसियों और सदूकियों के खमीर से चौकस रहना। १२ तब उनकी समझ में आया, कि उस ने रोटी के खमीर से नहीं, पर फरीसियों और सदूकियों की शिक्षा से चौकस रहने को कहा था॥

पतरस ने यीशु को मसीह प्रकाशित किया

१३ यीशु कैसरिया फिलिप्पी के देश में आकर अपने चेलों से पूछने लगा, कि लोग मनुष्य के पुत्र को क्या कहते हैं? १४ उन्हों ने कहा, कितने तो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहते हैं और कितने एलिय्याह, और कितने यिर्मयाह या भविष्यद्वक्ताओं में से कोई एक कहते हैं। १५ उस ने उस से कहा; परन्तु तुम मुझे क्या कहते हो? १६ शमौन पतरस ने उत्तर दिया, कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। १७ यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि हे शमौन योना के पुत्र, धन्य है; क्योंकि मांस और लोहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। १८ और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। १९ मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियां दूंगा: और जो कुछ तू पृथ्वी पर बान्धेगा, वह स्वर्ग में बन्धेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वह स्वर्ग में खुलेगा। २० तब उस ने चेलों को चिताया, कि किसी से न कहना! कि मैं मसीह हूं॥

यीशु अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान का संदेश देता है

२१ उस समय से यीशु अपने चेलों को बताने लगा, कि मुझे अवश्य है, कि यरूशलेम को जाऊं, और पुरनियों और महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ से बहुत दुःख उठाऊं; और मार डाला जाऊं; और तीसरे दिन जी उठूं। २२ इस पर पतरस उसे अलग ले जाकर झिड़कने लगा कि हे प्रभु, परमेश्वर न करे; तुझ पर ऐसा कभी न होगा। २३ उस ने फिर कर पतरस से कहा, हे शैतान, मेरे साम्हने से दूर हो: तू मेरे लिये ठोकर का कारण है; क्योंकि तू परमेश्वर की बातें नहीं, पर मनुष्यों की बातों पर मन लगाता है॥

स्वार्थ त्याग की पुकार

२४ तब यीशु ने अपने चेलों से कहा; यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्कार करे और अपना क्रूस उठाए, और मेरे पीछे हो ले। २५ क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। २६ यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा? २७ क्योंकि मनुष्य का पुत्र अपने स्वर्गदूतों के साथ अपने पिता की महिमा में आएगा, और उस समय वह हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा। २८ मैं तुम से सच कहता हूं, कि जो यहां खड़े हैं, उन में से कितने ऐसे हैं; कि जब तक मनुष्य के पुत्र को उसके राज्य में आते हुए न देख लेंगे, तब तक मृत्यु का स्वाद कभी न चखेंगे॥

रूप-रूपान्तर

१७ छः दिन के बाद यीशु ने पतरस और याकूब और उसके भाई यूहन्ना को साथ लिया, और उन्हें एकान्त में किसी ऊंचे पहाड़ पर ले गया। २ और उनके साम्हने उसका रूपान्तर हुआ और उसका मुंह सूर्य की नाईं चमका और उसका वस्त्र ज्योति की नाईं उजला हो गया। ३ और देखो, मूसा और एलिय्याह उसके साथ बातें करते हुए उन्हें दिखाई दिए। ४ इस पर पतरस ने यीशु से कहा, हे प्रभु, हमारा यहां रहना अच्छा है; इच्छा हो तो यहां तीन मण्डप बनाऊं; एक तेरे लियें, एक मूसा के लिये, और एक एलिय्याह के लिये। ५ वह बोल ही रहा था, कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: इसकी सुनो। ६ चेले यह सुनकर मुंह के बल गिर गए और अत्यन्त डर गए। ७ यीशु ने पास आकर उन्हें छूआ, और कहा, उठो; डरो मत।

८ तब उन्हों ने अपनी आंखें उठाकर यीशु को छोड़ और किसी को न देखा ॥

९ जब वे पहाड़ से उतर रहे थे तब यीशु ने उन्हें यह आज्ञा दी; कि जब तक मनुष्य का पुत्र मरे हुओं में से न जी उठे तब तक जो कुछ तुम ने देखा है किसी से न कहना। १० और उसके चेलों ने उस से पूछा, फिर शास्त्री क्यों कहते हैं, कि एलिय्याह का पहले आना अवश्य है? ११ उस ने उत्तर दिया, कि एलिय्याह तो आएगा: और सब कुछ सुधारेगा। १२ परन्तु मैं तुम से कहता हूं, कि एलिय्याह आ चुका, और उन्हों ने उसे नहीं पहचाना; परन्तु जैसा चाहा वैसा ही उसके साथ किया: इसी रीति से मनुष्य का पुत्र भी उनके हाथ से दुःख उठाएगा। १३ तब चेलों ने समझा कि उस ने हम से यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के विषय में कहा है ॥

भूतग्रस्त लड़के को चंगा करना

१४ जब वे भीड़ के पास पहुंचे, तो एक मनुष्य उसके पास आया, और घुटने टेककर कहने लगा। १५ हे प्रभु, मेरे पुत्र पर दया कर; क्योंकि उसको मिर्गी आती है: और वह बहुत दुःख उठाता है; और बार बार आग में और बार बार पानी में गिर पड़ता है। १६ और मैं उसको तेरे चेलों के पास लाया था, पर वे उसे अच्छा नहीं कर सके। १७ यीशु ने उत्तर दिया, कि हे अविश्वासी और हठीले लोगो, मैं कब तक तुम्हारे साथ रहूंगा? कब तक तुम्हारी सहूंगा? उसे यहां मेरे पास लाओ। १८ तब यीशु ने उसे घुड़का, और दुष्टात्मा उस में से निकली; और लड़का उसी घड़ी अच्छा हो गया। १९ तब चेलों ने एकान्त में यीशु के पास आकर कहा; हम इसे क्यों नहीं निकाल सके? २० उस ने उन से कहा, अपने विश्वास की घटी के कारण: क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो इस पहाड़ से कह सकोगे, कि यहां से सरककर वहां चला जा, तो वह चला जाएगा; २१ और कोई बात तुम्हारे लिये अन्होनी न होगी ॥

यीशु अपनी मृत्यु के विषय दूसरी बार भविष्यद्वाणी करता है

२२ जब वे गलील में थे, तो यीशु ने उन से कहा; मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा; २३ और वे उसे मार डालेंगे, और वह तीसरे दिन जी उठेगा। इस पर वे बहुत उदास हुए॥

मन्दिर का कर देना

२४ जब वे कफरनहूम में पहुंचे, तो मन्दिर के लिये कर लेनेवालों ने पतरस के पास आकर पूछा, कि क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर नहीं देता? उस ने कहा, हां देता तो है। २५ जब वह घर में आया, तो यीशु ने उसके पूछने से पहिले उस से कहा, हे शमौन तू क्या समझता है? पृथ्वी के राजा महसूल या कर किन से लेते हैं? अपने पुत्रों से या परायों से? २६ पतरस ने उस से कहा, परायों से; यीशु ने उस से कहा, तो पुत्र बच गए। २७ तौभी इसलिये कि हम उन्हें ठोकर न खिलाएं, तू झील के किनारे जाकर बंसी डाल, और जो मछली पहिले निकले, उसे ले; तो तुझे उसका मुंह खोलने पर एक सिक्का मिलेगा, उसी को लेकर मेरे और अपने बदले उन्हें दे देना॥

नम्रता की शिक्षा

१८ उसी घड़ी चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे, कि स्वर्ग के राज्य में बड़ा कौन है? २ इस पर उस ने एक बालक को पास बुलाकर उनके बीच में खड़ा किया। ३ और कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि यदि तुम न फिरो और बालकों के समान न बनो, तो स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने नहीं पाओगे। ४ जो कोई अपने आप को इस बालक के समान छोटा करेगा, वह स्वर्ग के राज्य में बड़ा होगा। ५ और जो कोई मेरे नाम से एक ऐसे बालक को ग्रहण करता है वह मुझे ग्रहण करता है॥

दूसरों के प्रति रुकावट की चितौनी

६ पर जो कोई इन छोटों में से जो मुझ पर विश्वास करते हैं एक को ठोकर खिलाए, उसके लिये भला होता, कि बड़ी चक्की का पाट उसके गले में लटकाया जाता, और वह गहिरे समुद्र में डुबाया जाता। ७ ठोकरों के कारण संसार पर हाय! ठोकरों का लगना अवश्य है; पर हाय उस मनुष्य पर जिसके द्वारा ठोकर लगती है। ८ सो यदि तेरा हाथ या पांव तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे काटकर अपने पास से फेंक दे; टुण्डा या लंगड़ा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो हाथ या दो पांव रहते हुए तू अनन्त आग में डाला जाए। ९ और यदि तेरी आंख तुझे ठोकर खिलाए, तो उसे निकालकर अपने पास से फेंक दे: काना होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इस से भला है, कि दो आंख रहते हुए तू नरक की आग में डाला जाए। १० देखो तुम इन छोटों में से किसी को तुच्छ न जानना; क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि स्वर्ग में उनके दूत मेरे स्वर्गीय पिता का मुंह सदा देखते हैं। ११ [क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढ़ने और बचाने आया है॥]

खोई हुई भेड़ का दृष्टान्त

१२ तुम क्या समझते हो? यदि किसी मनुष्य की सौ भेड़ें हों, और उन में से एक भटक जाए, तो क्या वह निन्नानवे को छोड़कर, और पहाड़ों पर जाकर, उस भटकी हुई को न ढूंढ़ेगा? १३ और यदि ऐसा हो कि उसे पाए, तो मैं तुम से सच कहता हूं, कि वह उन निन्नानवे भेड़ों के लिये जो भटकी नहीं थीं इतना आनन्द नहीं करेगा, जितना कि इस भेड़ के लिये करेगा। १४ ऐसा ही तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है यह इच्छा नहीं, कि इन छोटों में से एक भी नाश हो॥

बुराई करनेवालों के साथ कैसा व्यवहार करना है

१५ यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे, तो जा और अकेले में बातचीत करके उसे समझा; यदि वह तेरी सुने तो तू ने अपने भाई को पा

लिया। १६ और यदि वह न सुने, तो और एक दो जन को अपने साथ ले जा, कि हर एक बात दो या तीन गवाहों के मुंह से ठहराई जाय। १७ यदि वह उनकी भी न माने, तो कलीसिया से कह दे, परन्तु यदि वह कलीसिया की भी न माने, तो तू उसे अन्यजाति और महसूल लेनेवाले के ऐसा जान। १८ मैं तुम से सच कहता हूं, जो कुछ तुम पृथ्वी पर बान्धोगे, वह स्वर्ग में बन्धेगा और जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोलोगे, वह स्वर्ग में खुलेगा॥

ऐक्य चित्त की प्रार्थना

१९ फिर मैं तुम से कहता हूं, यदि तुम में से दो जन पृथ्वी पर किसी बात के लिये जिसे वे मांगें, एक मन के हों, तो वह मेरे पिता की ओर से जो स्वर्ग में है उनके लिये हो जाएगी। २० क्योंकि जहां दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहां मैं उनके बीच में होता हूं॥

क्षमा करना कर्त्तव्य कर्म है, और अकृतज्ञ दास

२१ तब पतरस ने पास आकर, उस से कहा, हे प्रभु, यदि मेरा भाई अपराध करता रहे, तो मैं कितनी बार उसे क्षमा करूं, क्या सात बार तक? २२ यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक। २३ इसलिये स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने दासों से लेखा लेना चाहा। २४ जब वह लेखा लेने लगा, तो एक जन उसके साम्हने लाया गया जो दस हजार तोड़े धारता था। २५ जब कि चुकाने को उसके पास कुछ न था, तो उसके स्वामी ने कहा, कि यह और इसकी पत्नी और लड़के-बाले और जो कुछ इसका है सब बेचा जाए, और वह कर्ज चुका दिया जाए। २६ इस पर उस दास ने गिरकर उसे प्रणाम किया, और कहा; हे स्वामी, धीरज धर, मैं सब कुछ भर दूंगा। २७ तब उस दास के स्वामी ने तरस खाकर उसे छोड़ दिया, और उसका कर्ज क्षमा किया। २८ परन्तु जब वह दास बाहर निकला, तो उसके संगी दासों में से एक उसको मिला, जो उसके सौ दीनार धारता था; उस ने उसे पकड़कर

उसका गला घोंटा, और कहा; जो कुछ तू धारता है भर दे। २९ इस पर उसका संगी दास गिरकर, उस से बिनती करने लगा; कि धीरज धर, मैं सब भर दूंगा। ३० उस ने न माना, परन्तु जाकर उसे बन्दीगृह में डाल दिया; कि जब तक कर्ज को भर न दे, तब तक वहीं रहे। ३१ उसके संगी दास यह जो हुआ था देखकर बहुत उदास हुए, और जाकर अपने स्वामी को पूरा हाल बता दिया। ३२ तब उसके स्वामी ने उसको बुलाकर उस से कहा, हे दुष्ट दास, तू ने जो मुझ से बिनती की, तो मैं ने तो तेरा वह पूरा कर्ज क्षमा किया। ३३ सो जैसा मैं ने तुझ पर दया की, वैसे ही क्या तुझे भी अपने संगी दास पर दया करना नहीं चाहिए था? ३४ और उसके स्वामी ने क्रोध में आकर उसे दण्ड देनेवालों के हाथ में सौंप दिया, कि जब तक वह सब कर्ज भर न दे, तब तक उनके हाथ में रहे। ३५ इसी प्रकार यदि तुम में से हर एक अपने भाई को मन से क्षमा न करेगा, तो मेरा पिता जो स्वर्ग में है, तुम से भी वैसा ही करेगा॥

त्याग पत्र का प्रश्न

१९ जब यीशु ये बातें कह चुका, तो गलील से चला गया; और यहूदिया के देश में यरदन के पार आया। २ और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली, और उस ने उन्हें वहां चंगा किया॥

३ तब फरीसी उसकी परीक्षा करने के लिये पास आकर कहने लगे, क्या हर एक कारण से अपनी पत्नी को त्यागना उचित है? ४ उस ने उत्तर दिया, क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिस ने उन्हें बनाया, उस ने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा। ५ कि इस कारण मनुष्य अपने माता पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे? ६ सो वे अब दो नहीं परन्तु एक तन हैः इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे। ७ उन्हों ने उस से कहा, फिर मूसा ने क्यों यह ठहराया, कि त्यागपत्र देकर उसे छोड़ दे? ८ उस ने उन से कहा, मूसा ने तुम्हारे मन की कठोरता के कारण तुम्हें अपनी अपनी पत्नी को छोड़ देने की आज्ञा दी, परन्तु आरम्भ से ऐसा नहीं था।

९ और मैं तुम से कहता हूं, कि जो कोई व्यभिचार को छोड़ और किसी कारण से, अपनी पत्नी को त्यागकर, दूसरी से ब्याह करे, वह व्यभिचार करता है: और जो उस छोड़ी हुई से ब्याह करे, वह भी व्यभिचार करता है। १० चेलों ने उस से कहा, यदि पुरुष का स्त्री के साथ ऐसा सम्बन्ध है, तो ब्याह करना अच्छा नहीं। ११ उस ने उन से कहा, सब यह वचन ग्रहण नहीं कर सकते, केवल वे जिनको यह दान दिया गया है। १२ क्योंकि कुछ नपुंसक ऐसे हैं जो माता के गर्भ ही से ऐसे जन्मे; और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हें मनुष्य ने नपुंसक बनाया: और कुछ नपुंसक ऐसे हैं, जिन्हों ने स्वर्ग के राज्य के लिये अपने आप को नपुंसक बनाया है, जो इसको ग्रहण कर सकता है, वह ग्रहण करे॥

यीशु छोटे बच्चों को आशीर्वाद देता है

१३ तब लोग बालकों को उसके पास लाए, कि वह उन पर हाथ रखे और प्रार्थना करे; पर चेलों ने उन्हें डांटा। १४ यीशु ने कहा, बालकों को मेरे पास आने दो: और उन्हें मना न करो, क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है। १५ और वह उन पर हाथ रखकर, वहां से चला गया॥

एक नवयुवक धनी अनन्त जीवन की खोज करता है

१६ और देखो, एक मनुष्य ने पास आकर उस से कहा, हे गुरू, मैं कौन सा भला काम करूं, कि अनन्त जीवन पाऊं? १७ उस ने उस से कहा, तू मुझ से भलाई के विषय में क्यों पूछता है? भला तो एक ही है; पर यदि तू जीवन में प्रवेश करना चाहता है, तो आज्ञाओं को माना कर। १८ उस ने उस से कहा, कौन सी आज्ञाएं? यीशु ने कहा, यह कि हत्या न करना, व्यभिचार न करना, चोरी न करना, झूठी गवाही न देना। १९ अपने पिता और अपनी माता का आदर करना, और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना। २० उस जवान ने उस से कहा, इन सब को तो मैं ने माना है अब मुझ में किस बात की घटी है? २१ यीशु ने उस

से कहा, यदि तू सिद्ध होना चाहता है; तो जा, अपना माल बेचकर कंगालों को दे; और तुझे स्वर्ग में धन मिलेगा; और आकर मेरे पीछे हो ले। २२ परन्तु वह जवान यह बात सुन उदास होकर चला गया, क्योंकि वह बहुत धनी था॥

धन से दुर्लभताएं

२३ तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है। २४ फिर तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है। २५ यह सुनकर, चेलों ने बहुत चकित होकर कहा, फिर किस का उद्धार हो सकता है? २६ यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है। २७ इस पर पतरस ने उस से कहा, कि देख, हम तो सब कुछ छोड़ के तेरे पीछे हो लिये हैं: तो हमें क्या मिलेगा? २८ यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि नई उत्पत्ति मे जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, तो तुम भी जो मेरे पीछे हो लिए हो, बारह सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करोगे। २९ और जिस किसी ने घरों या भाइयों या बहिनों या पिता या माता या लड़केबालों या खेतों को मेरे नाम के लिये छोड़ दिया है, उसको सौ गुना मिलेगा: और वह अनन्त जीवन का अधिकारी होगा। ३० परन्तु बहुतेरे जो पहिले हैं, पिछले होंगे; और जो पिछले हैं, पहिले होंगे॥

दाख की बारी के मजदूरों का दृष्टान्त

२० स्वर्ग का राज्य किसी गृहस्थ के समान है, जो सवेरे निकला, कि अपने दाख की बारी में मजदूरों को लगाए। २ और उस ने मजदूरों से एक दीनार रोज पर ठहराकर, उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा। ३ फिर पहर एक दिन चढ़े, निकलकर, और औरों को बाजार

में बेकार खड़े देखकर, ४ उन से कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूंगा; सो वे भी गए। ५ फिर उस ने दूसरे और तीसरे पहर के निकट निकलकर वैसा ही किया। ६ और एक घंटा दिन रहे फिर निकलकर औरों को खड़े पाया, और उन से कहा; तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े रहे? उन्हों ने उस से कहा, इसलिये कि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं लगाया। ७ उस ने उन से कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ। ८ सांझ को दाख की बारी के स्वामी ने अपने भण्डारी से कहा, मजदूरों को बुलाकर पिछलों से लेकर पहिलों तक उन्हें मजदूरी दे दे। ९ सो जब वे आए, जो घंटा भर दिन रहे लगाए गए थे, तो उन्हें एक एक दीनार मिला। १० जो पहिले आए, उन्हों ने यह समझा, कि हमें अधिक मिलेगा; परन्तु उन्हें भी एक ही एक दीनार मिला। ११ जब मिला, तो वे गृहस्थ पर कुड़कुड़ा के कहने लगे। १२ कि इन पिछलों ने एक ही घंटा काम किया, और तू ने उन्हें हमारे बराबर कर दिया, जिन्हों ने दिन भर का भार उठाया और घाम सहा? १३ उस ने उन में से एक को उत्तर दिया, कि हे मित्र, मैं तुझ से कुछ अन्याय नहीं करता; क्या तू ने मुझ से एक दीनार न ठहराया? १४ जो तेरा है, उठा ले, और चला जा; मेरी इच्छा यह है, कि जितना तुझे, उतना ही इस पिछले को भी दूं। १५ क्या उचित नहीं कि मैं अपने माल से जो चाहूं सो करूं? क्या तू मेरे भले होने के कारण बुरी दृष्टि से देखता है? १६ इसी रीति से जो पिछले हैं, वे पहिले होंगे, और जो पहिले हैं, वे पिछले होंगे॥

यीशु अपनी मृत्यु की तीसरी भविष्यद्वाणी

१७ यीशु यरूशलेम को जाते हुए बारह चेलों को एकान्त में ले गया, और मार्ग में उन से कहने लगा। १८ कि देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं; और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उसको घात के योग्य ठहराएंगे। १९ और उसको अन्य जातियों के हाथ सौंपेंगे, कि वे उसे ठट्ठों में उड़ाएं, और कोड़े मारें, और क्रूस पर चढ़ाएं, और वह तीसरे दिन जिलाया जाएगा॥

संसारिक मान के लिये बिनती

२० तब जबदी के पुत्रों की माता ने, अपने पुत्रों के साथ उसके पास आकर प्रणाम किया, और उस से कुछ मांगने लगी। २१ उस ने उस से कहा, तू क्या चाहती है? वह उस से बोली, यह कह, कि मेरे ये दो पुत्र तेरे राज्य में एक तेरे दहिने और एक तेरे बाएं बैठें। २२ यीशु ने उत्तर दिया, तुम नहीं जानते कि क्या मांगते हो? जो कटोरा मैं पीने पर हूं, क्या तुम पी सकते हो? उन्हों ने उस से कहा, पी सकते हैं। २३ उस ने उन से कहा, तुम मेरा कटोरा तो पीओगे, पर अपने दहिने बाएं किसी को बिठाना मेरा काम नहीं, पर जिनके लिये मेरे पिता की ओर से तैयार किया गया, उन्हीं के लिये है। २४ यह सुनकर, दसों चेले उन दोनों भाइयों पर क्रुद्ध हुए॥

सत्य महत्व

२५ परन्तु यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, तुम जानते हो, कि अन्य जातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा न होगा; २६ परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने। २७ और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने। २८ जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे॥

दो अन्धों का दृष्टि पाना

२९ जब वे यरीहो से निकल रहे थे, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली। ३० और देखो, दो अन्धे, जो सड़क के किनारे बैठे थे, यह सुन कर कि यीशु जा रहा है, पुकारकर कहने लगे; कि हे प्रभु, दाऊद के सन्तान; हम पर दया कर। ३१ लोगों ने उन्हें डांटा, कि चुप रहें; पर वे और भी चिल्लाकर बोले, हे प्रभु, दाऊद के सन्तान; हम पर दया कर। ३२ तब यीशु ने खड़े होकर, उन्हें बुलाया, और कहा; तुम क्या चाहते

हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं? ३३ उन्हों ने उस से कहा, हे प्रभु; यह कि हमारी आंखें खुल जाएं। ३४ यीशु ने तरस खाकर उनकी आंखें छुईं और वे तुरन्त देखने लगे; और उसके पीछे हो लिए॥

यीशु का यरूशलेम में विजयी प्रवेश

२१ जब वे यरूशलेम के निकट पहुंचे और जैतून पहाड़ पर बैतफगे के पास आए, तो यीशु ने दो चेलों को यह कहकर भेजा। २ कि अपने साम्हने के गांव में जाओ, वहां पहुंचते ही एक गदही बन्धी हुई, और उसके साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा; उन्हें खोल कर, मेरे पास ले आओ। ३ और यदि तुम से कोई कुछ कहे, तो कहो, कि प्रभु को इनका प्रयोजन है: तब वह तुरन्त उन्हें भेज देगा। ४ यह इसलिये हुआ, कि जो वचन भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था, वह पूरा हो; ५ कि सिय्योन की बेटी से कहो, देख, तेरा राजा तेरे पास आता है; वह नम्र है और गदहे पर बैठा है; वरन लादू के बच्चे पर। ६ चेलों ने जाकर, जैसा यीशु ने उन से कहा था, वैसा ही किया। ७ और गदही और बच्चे को लाकर, उन पर अपने कपड़े डाले, और वह उन पर बैठ गया। ८ और बहुतेरे लोगों ने अपने कपड़े मार्ग में बिछाए, और और लोगों ने पेड़ों से डालियां काटकर मार्ग में बिछाईं। ९ और जो भीड़ आगे आगे जाती और पीछे पीछे चली आती थी, पुकार पुकारकर कहती थी, कि दाऊद के सन्तान को होशाना; धन्य है वह जो प्रभु के नाम से आता है, आकाश में होशाना। १० जब उस ने यरूशलेम में प्रवेश किया, तो सारे नगर में हलचल मच गई; और लोग कहने लगे, यह कौन है? ११ लोगों ने कहा, यह गलील के नासरत का भविष्यद्वक्ता यीशु है॥

मन्दिर का शुद्ध करना

१२ यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सब को, जो मन्दिर में लेन देन कर रहे थे, निकाल दिया; और सर्राफों के पीढ़े और कबूतरों के बेचनेवालों की चौकियां उलट दीं। १३ और उन से कहा, लिखा है,

कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो। १४ और अन्धे और लंगड़े, मन्दिर में उसके पास आए, और उस ने उन्हें चंगा किया। १५ परन्तु जब महायाजकों और शास्त्रियों ने इन अद्‌भुत कामों को, जो उस ने किए, और लड़कों को मन्दिर में दाऊद के सन्तान को होशाना पुकारते हुए देखा, तो क्रोधित होकर उस से कहने लगे, क्या तू सुनता है कि ये क्या कहते हैं? १६ यीशु ने उन से कहा, हां; क्या तुम ने यह कभी नहीं पढ़ा, कि बालकों और दूध पीते बच्चों के मुंह से तू ने स्तुति सिद्ध कराई? १७ तब वह उन्हें छोड़कर नगर के बाहर बैतनिय्याह को गया, और वहां रात बिताई॥

अंजीर का फलरहित पेड़

१८ भोर को जब वह नगर को लौट रहा था, तो उसे भूख लगी। १९ और अंजीर का एक पेड़ सड़क के किनारे देखकर वह उसके पास गया, और पत्तों को छोड़ उस में और कुछ न पाकर उस से कहा, अब से तुझ में फिर कभी फल न लगे; और अंजीर का पेड़ तुरन्त सूख गया। २० यह देख कर चेलों ने अचम्भा किया, और कहा, यह अंजीर का पेड़ क्योंकर तुरन्त सूख गया? २१ यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं; यदि तुम विश्वास रखो, और संदेह न करो; तो न केवल यह करोगे, जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है; परन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहोगे, कि उखड़ जा; और समुद्र में जा पड़, तो यह हो जायगा। २२ और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा॥

यीशु के अधिकार पर प्रश्न

२३ वह मन्दिर में जाकर उपदेश कर रहा था, कि महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने उसके पास आकर पूछा, तू ये काम किस के अधिकार से करता है? और तुझे यह अधिकार किस ने दिया है? २४ यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि मैं भी तुम से एक बात पूछता हूं; यदि वह मुझे

बताओगे, तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा; कि ये काम किस अधिकार से करता हूं। २५ यूहन्ना का बपतिस्मा कहां से था? स्वर्ग की ओर से या मनुष्यों की ओर से था? तब वे आपस में विवाद करने लगे, कि यदि हम कहें स्वर्ग की ओर से, तो वह हम से कहेगा, फिर तुम ने उसकी प्रतीति क्यों न की? २६ और यदि कहें मनुष्यों की ओर से तो हमें भीड़ का डर है; क्योंकि वे सब यूहन्ना को भविष्यद्वक्ता जानते हैं। २७ सो उन्हों ने यीशु को उत्तर दिया, कि हम नहीं जानते, उस ने भी उन से कहा, तो मैं भी तुम्हें नहीं बताता, कि ये काम किस अधिकार से करता हूं॥

दो पुत्रों का दृष्टान्त

२८ तुम क्या समझते हो? किसी मनुष्य के दो पुत्र थे; उस ने पहिले के पास जाकर कहा; हे पुत्र, आज दाख की बारी में काम कर। २९ उस ने उत्तर दिया, मैं नहीं जाऊंगा, परन्तु पीछे पछता कर गया। ३० फिर दूसरे के पास जाकर ऐसा ही कहा, उस ने उत्तर दिया, जी हां जाता हूं, परन्तु नहीं गया। ३१ इन दोनों में से किस ने पिता की इच्छा पूरी की? उन्हों ने कहा, पहिले ने: यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि महसूल लेनेवाले और वेश्या तुम से पहिले परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करते हैं। ३२ क्योंकि यूहन्ना धर्म के मार्ग से तुम्हारे पास आया, और तुम ने उसकी प्रतीति न की: पर महसूल लेनेवालों और वेश्याओं ने उसकी प्रतीति की: और तुम यह देखकर पीछे भी न पछताए कि उसकी प्रतीति कर लेते॥

दाख की बारी का दृष्टान्त

३३ एक और दृष्टान्त सुनो: एक गृहस्थ था, जिस ने दाख की बारी लगाई; और उसके चारों ओर बाड़ा बान्धा; और उस में रस का कुंड खोदा; और गुम्मट बनाया; और किसानों को उसका ठीका देकर परदेश चला गया। ३४ जब फल का समय निकट आया, तो उस ने अपने दासों को उसका फल लेने के लिये किसानों के पास भेजा। ३५ पर किसानों ने उसके दासों को पकड़ के, किसी को पीटा, और किसी को मार डाला;

और किसी को पत्थरवाह किया। ३६ फिर उस ने और दासों को भेजा, जो पहिलों से अधिक थे; और उन्हों ने उन से भी वैसा ही किया। ३७ अन्त में उस ने अपने पुत्र को उनके पास यह कहकर भेजा, कि वे मेरे पुत्र का आदर करेंगे। ३८ परन्तु किसानों ने पुत्र को देखकर आपस में कहा, यह तो वारिस है, आओ, उसे मार डालें: और उसकी मीरास ले लें। ३९ और उन्हों ने उसे पकड़ा और दाख की बारी से बाहर निकाल कर मार डाला। ४० इसलिये जब दाख की बारी का स्वामी आएगा, तो उन किसानों के साथ क्या करेगा? ४१ उन्हों ने उस से कहा, वह उन बुरे लोगों को बुरी रीति से नाश करेगा; और दाख की बारी का ठीका और किसानों को देगा, जो समय पर उसे फल दिया करेंगे। ४२ यीशु ने उन से कहा, क्या तुम ने कभी पवित्र शास्त्र में यह नहीं पढ़ा, कि जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने के सिरे का पत्थर हो गया? यह प्रभु की ओर से हुआ, और हमारे देखने में अद्भुत है। ४३ इसलिये मैं तुम से कहता हूं, कि परमेश्वर का राज्य तुम से ले लिया जाएगा; और ऐसी जाति को जो उसका फल लाए; दिया जाएगा। ४४ जो इस पत्थर पर गिरेगा, वह चकनाचूर हो जाएगा: और जिस पर वह गिरेगा, उसको पीस डालेगा। ४५ महायाजक और फरीसी उसके दृष्टान्तों को सुनकर समझ गए, कि वह हमारे विषय में कहता है। ४६ और उन्हों ने उसे पकड़ना चाहा, परन्तु लोगों से डर गए क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते थे॥

विवाह की दावत का दृष्टान्त

२२ और यीशु फिर उन से दृष्टान्तों में कहने लगा। २ स्वर्ग का राज्य उस राजा के समान है, जिस ने अपने पुत्र का ब्याह किया। ३ और उस ने अपने दासों को भेजा, कि नेवताहारियों को ब्याह के भोज में बुलाएं; परन्तु उन्हों ने आना न चाहा। ४ फिर उस ने और दासों को यह कहकर भेजा, कि नेवताहारियों से कहो, देखो; मैं भोज तैयार कर चुका हूं, और मेरे बैल और पले हुए पशु मारे गए हैं, और सब कुछ

तैयार है; ब्याह के भोज में आओ। ५ परन्तु वे बेपरवाई करके चल दिए: कोई अपने खेत को, कोई अपने ब्योपार को। ६ औरों ने जो बच रहे थे उसके दासों को पकडकर उनका अनादर किया और मार डाला। ७ राजा ने क्रोध किया, और अपनी सेना भेजकर उन हत्यारों को नाश किया, और उनके नगर को फूंक दिया। ८ तब उस ने अपने दासों से कहा, ब्याह का भोज तो तैयार है, परन्तु नेवताहारी योग्य नहीं ठहरे। ९ इसलिये चौराहों में जाओ और जितने लोग तुम्हें मिलें, सब को ब्याह के भोज में बुला लाओ। १० सो उन दासों ने सड़कों पर जाकर क्या बुरे, क्या भले, जितने मिले, सब को इकट्ठे किया; और ब्याह का घर जेवनहारों से भर गया। ११ जब राजा जेवनहारों के देखने को भीतर आया; तो उस ने वहां एक मनुष्य को देखा, जो ब्याह का वस्त्र नहीं पहिने था। १२ उस ने उस से पूछा, हे मित्र; तू ब्याह का वस्त्र पहिने बिना यहां क्यों आ गया? उसका मुंह बन्द हो गया। १३ तब राजा ने सेवकों से कहा, इसके हाथ पांव बान्धकर उसे बाहर अन्धियारे में डाल दो, वहां रोना, और दांत पीसना होगा। १४ क्योंकि बुलाये हुए तो बहुत परन्तु चुने हुए थोड़े हैं॥

कर के विषय प्रश्न

१५ तब फरीसियों ने जाकर आपस में विचार किया, कि उसको किस प्रकार बातों में फंसाएं। १६ सो उन्हों ने अपने चेलों को हेरोदियों के साथ उसके पास यह कहने को भेजा, कि हे गुरु; हम जानते हैं, कि तू सच्चा है; और परमेश्वर का मार्ग सच्चाई से सिखाता है; और किसी की परवाह नहीं करता, क्योंकि तू मनुष्यों का मुंह देखकर बातें नहीं करता। १७ इसलिये हमें बता तू क्या समझता है? कैसर को कर देना उचित है, कि नहीं। १८ यीशु ने उनकी दुष्टता जानकर कहा, हे कपटियो; मुझे क्यों परखते हो? १९ कर का सिक्का मुझे दिखाओ: तब वे उसके पास एक दीनार ले आए। २० उस ने, उन से पूछा, यह मूर्त्ति और नाम किस का है? २१ उन्हों ने उस से कहा, कैसर का; तब उस ने उन से कहा; जो कैसर का है, वह कैसर को; और जो परमेश्वर का है, वह

परमेश्वर को दो। २२ यह सुनकर उन्हों ने अचम्भा किया, और उसे छोड़कर चले गए॥

पुनरुत्थान के विषय प्रश्न

२३ उसी दिन सदूकी जो कहते हैं कि मरे हुओं का पुनरुत्थान है ही नहीं उसके पास आए, और उस से पूछा। २४ कि हे गुरु; मूसा ने कहा था, कि यदि कोई बिना सन्तान मर जाए, तो उसका भाई उसकी पत्नी को ब्याह करके अपने भाई के लिये बंश उत्पन्न करे। २५ अब हमारे यहां सात भाई थे; पहिला ब्याह करके मर गया; और सन्तान न होने के कारण अपनी पत्नी को अपने भाई के लिये छोड गया। २६ इसी प्रकार दूसरे और तीसरे ने भी किया, और सातों तक यही हुआ। २७ सब के बाद वह स्त्री भी मर गई। २८ सो जी उठने पर, वह उन सातों में से किस की पत्नी होगी? क्योंकि वह सब की पत्नी हो चुकी थी। २९ यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि तुम पवित्र शास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़ गए हो। ३० क्योंकि जी उठने पर ब्याह शादी न होगी; परन्तु वे स्वर्ग में परमेश्वर के दूतों की नाईं होंगे। ३१ परन्तु मरे हुओं के जी उठने के विषय में क्या तुम ने यह वचन नहीं पढा जो परमेश्वर ने तुम से कहा। ३२ कि मैं इब्राहीम का परमेश्वर, और इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर हूं? वह तो मरे हुओं का नहीं, परन्तु जीवितों का परमेश्वर है। ३३ यह सुनकर लोग उसके उपदेश से चकित हुए॥

सर्वश्रेष्ठ आज्ञा पर प्रश्न

३४ जब फरीसियों ने सुना, कि उस ने सदूकियों का मुंह बन्द कर दिया; तो वे इकट्ठे हुए। ३५ और उन में से एक व्यवस्थापक ने परखने के लिये, उस से पूछा। ३६ हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है? ३७ उस ने उस से कहा, तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। ३८ बड़ी

और मुख्य आज्ञा तो यही है। ३९ और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ४० ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है॥

मसीह के विषय प्रश्न

४१ जब फरीसी इकट्ठे थे, तो यीशु ने उन से पूछा। ४२ कि मसीह के विषय में तुम क्या समझते हो? वह किस का सन्तान है? उन्हों ने उस से कहा, दाऊद का। ४३ उस ने उन से पूछा, तो दाऊद आत्मा में होकर उसे प्रभु क्यों कहता है? ४४ कि प्रभु ने, मेरे प्रभु से कहा; मेरे दहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों के नीचे न कर दूं। ४५ भला, जब दाऊद उसे प्रभु कहता है, तो वह उसका पुत्र क्योंकर ठहरा? ४६ उसके उत्तर में कोई भी एक बात न कह सका; परन्तु उस दिन से किसी को फिर उस से कुछ पूछने का हियाव न हुआ॥

यीशु शास्त्रियों और फरीसियों को दोषी ठहराता है

२३ तब यीशु ने भीड़ से और अपने चेलों से कहा। २ शास्त्री और फरीसी मूसा की गद्दी पर बैठे हैं। ३ इसलिये वे तुम से जो कुछ कहें वह करना, और मानना; परन्तु उनके से काम मत करना; क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं। ४ वे एक ऐसे भारी बोझ को जिनको उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्यों के कन्धों पर रखते हैं; परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते। ५ वे अपने सब काम लोगों को दिखाने के लिये करते हैं: वे अपने तावीजों को चौड़े करते, और अपने वस्त्रों की कोरें बढ़ाते हैं। ६ जेवनारों में मुख्य मुख्य जगहें, और सभा में मुख्य मुख्य आसन। ७ और बाजारों में नमस्कार और मनुष्य में रब्बी कहलाना उन्हें भाता है। ८ परन्तु तुम रब्बी न कहलाना; क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है: और तुम सब भाई हो। ९ और पृथ्वी पर किसी को अपना पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है। १० और स्वामी भी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक

ही स्वामी है, अर्थात् मसीह। ११ जो तुम में बड़ा हो, वह तुम्हारा सेवक बने। १२ जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।।

१३ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम मनुष्यों के विरोध में स्वर्ग के राज्य का द्वार बन्द करते हो, न तो आप ही उस में प्रवेश करते हो और न उस में प्रवेश करनेवालों को प्रवेश करने देते हो।।

[१४ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम विधवाओं के घरों को दबा बैठते हो और दिखाने के लिये लम्बी प्रार्थना करते हो तुम्हें अधिक दण्ड मिलेगा।।]

१५ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम एक जन को अपने मत में लाने के लिये सारे जल और थल में फिरते हो, और जब वह मत में आ जाता है, तो उसे अपने से दूना नारकीय बना देते हो।।

१६ हे अन्धे अगुवो, तुम पर हाय! जो कहते हो कि यदि कोई मन्दिर की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु यदि कोई मन्दिर के सोने की सौगन्ध खाए तो उस से बन्ध जाएगा। १७ हे मूर्खों, और अन्धो, कौन बड़ा है, सोना या वह मन्दिर जिस से सोना पवित्र होता है? १८ फिर कहते हो, कि यदि कोई वेदी की शपथ खाए तो कुछ नहीं, परन्तु जो भेंट उस पर है, यदि कोई उसकी शपथ खाए तो बन्ध जाएगा। १९ हे अन्धो, कौन बड़ा है, भेंट या वेदी: जिस से भेंट पवित्र होता है? २० इसलिये जो वेदी की शपथ खाता है, वह उसकी, और जो कुछ उस पर है, उसकी भी शपथ खाता है। २१ और जो मन्दिर की शपथ खाता है, वह उसकी और उस में रहनेवाले की भी शपथ खाता है। २२ और जो स्वर्ग की शपथ खाता है, वह परमेश्वर के सिंहासन की और उस पर बैठनेवाले की भी शपथ खाता है।।

२३ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम पोदीने और सौंफ और जीरे का दसवां अंश देते हो, परन्तु तुम ने व्यवस्था की

गम्भीर बातों को अर्थात् न्याय, और दया, और विश्वास को छोड़ दिया है; चाहिये था कि इन्हें भी करते रहते, और उन्हें भी न छोड़ते। २४ हे अन्धे अगुवो, तुम मच्छर को तो छान डालते हो, परन्तु ऊंट को निगल जाते हो॥

२५ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम कटोरे और थाली को ऊपर ऊपर से तो मांजते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर और असंयम से भरे हुए हैं। २६ हे अन्धे फरीसी, पहिले कटोरे और थाली को भीतर से मांज कि वे बाहर से भी स्वच्छ हों॥

२७ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम चूना फिरी हुई कब्रों के समान हो जो ऊपर से तो सुन्दर दिखाई देती हैं, परन्तु भीतर मुर्दों की हड्डियों और सब प्रकार की मलिनता से भरी हैं। २८ इसी रीति से तुम भी ऊपर से मनुष्यों को धर्मी दिखाई देते हो, परन्तु भीतर कपट और अधर्म से भरे हुए हो॥

२९ हे कपटी शास्त्रियो और फरीसियो, तुम पर हाय! तुम भविष्यद्वक्ताओं की कब्रें संवारते और धर्मियों की कब्रें बनाते हो। ३० और कहते हो, कि यदि हम अपने बापदादों के दिनों में होते तो भविष्यद्वक्ताओं की हत्या में उनके साझी न होते। ३१ इस से तो तुम अपने पर आप ही गवाही देते हो, कि तुम भविष्यद्वक्ताओं के घातकों की सन्तान हो। ३२ सो तुम अपने बापदादों के पाप का घड़ा भर दो। ३३ हे सांपो, हे करैतों के बच्चो, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे? ३४ इसलिये देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूं; और तुम उन में से कितनों को मार डालोगे, और क्रूस पर चढ़ाओगे; और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे। ३५ जिस से धर्मी हाबील से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकरयाह तक, जिसे तुम ने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लोहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा। ३६ मैं तुम से सच कहता हूं, ये सब बातें इस समय के लोगों पर आ पड़ेंगी॥

यीशु का यरूशलेम की दशा पर शोक करना

३७ हे यरूशलेम, हे यरूशलेम; तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालती है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह करती है, कितनी ही बार मैं ने चाहा कि जैसे मुर्गी अपने बच्चों को अपने पंखों के नीचे इकट्ठे करती है, वैसे ही मैं भी तेरे बालकों को इकट्ठे कर लूं, परन्तु तुम ने न चाहा। ३८ देखो, तुम्हारे घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। ३९ क्योंकि मैं तुम से कहता हूं, कि अब से जब तक तुम न कहोगे, कि धन्य है वह, जो प्रभु के नाम से आता है, तब तक तुम मुझे फिर कभी न देखोगे॥

यीशु मन्दिर के नष्ट होने की और युग के अन्त होने की भविष्यद्वाणी करता है

२४ जब यीशु मन्दिर से निकलकर जा रहा था, तो उसके चेले उसको मन्दिर की रचना दिखाने के लिये उसके पास आए। २ उस ने उन से कहा, क्या तुम यह सब नहीं देखते? मैं तुम से सच कहता हूं, यहां पत्थर पर पत्थर भी न छूटेगा, जो ढाया न जाएगा॥

३ और जब वह जैतून पहाड़ पर बैठा था, तो चेलों ने अलग उसके पास आकर कहा, हम से कह कि ये बातें कब होंगी? और तेरे आने का, और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा? ४ यीशु ने उनको उत्तर दिया, सावधान रहो! कोई तुम्हें न भरमाने पाए। ५ क्योंकि बहुत से ऐसे होंगे जो मेरे नाम से आकर कहेंगे, कि मैं मसीह हूं: और बहुतों को भरमाएंगे। ६ तुम लड़ाइयों और लड़ाइयों की चर्चा सुनोगे; देखो घबरा न जाना क्योंकि इनका होना अवश्य है, परन्तु उस समय अन्त न होगा। ७ क्योंकि जाति पर जाति, और राज्य पर राज्य चढ़ाई करेगा, और जगह जगह अकाल पड़ेंगे, और भुईडोल होंगे। ८ ये सब बातें पीड़ाओं का आरम्भ होंगी। ९ तब वे क्लेश दिलाने के लिये तुम्हें पकड़वाएंगे, और तुम्हें मार डालेंगे और मेरे नाम के कारण सब जातियों के लोग तुम से बैर रखेंगे। १० तब बहुतेरे ठोकर खाएंगे, और एक दूसरे को पकड़वाएंगे, और एक दूसरे से बैर रखेंगे। ११ और बहुत से झूठे

भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बहुतों को भरमाएंगे। १२ और अधर्म के बढ़ने से बहुतों का प्रेम ठण्डा हो जाएगा। १३ परन्तु जो अन्त तक धीरज धरे रहेगा, उसी का उद्धार होगा। १४ और राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया जाएगा, कि सब जातियों पर गवाही हो, तब अन्त आ जाएगा॥

१५ सो जब तुम उस उजाड़नेवाले घृणित वस्तु को जिसकी चर्चा दानिय्येल भविष्यद्वक्ता के द्वारा हुई थी, पवित्र स्थान में खड़ी हुई देखो, (जो पढ़े, वह समझे)। १६ तब जो यहूदिया में हों वे पहाड़ों पर भाग जाएं। १७ जो कोठे पर हो, वह अपने घर में से सामान लेने को न उतरे। १८ और जो खेत में हो, वह अपना कपड़ा लेने को पीछे न लौटे। १९ उन दिनों में जो गर्भवती और दूध पिलाती होंगी, उनके लिये हाय! हाय! २० और प्रार्थना किया करो; कि तुम्हें जाड़े में या सब्त के दिन भागना न पड़े। २१ क्योंकि उस समय ऐसा भारी क्लेश होगा, जैसा जगत के आरम्भ से न अब तक हुआ, और न कभी होगा। २२ और यदि वे दिन घटाए न जाते, तो कोई प्राणी न बचता; परन्तु चुने हुओं के कारण वे दिन घटाए जाएंगे। २३ उस समय यदि कोई तुम से कहे, कि देखो, मसीह यहां है या वहां है तो प्रतीति न करना। २४ क्योंकि झूठे मसीह और झूठे भविष्यद्वक्ता उठ खड़े होंगे, और बड़े चिन्ह, और अद्भुत काम दिखाएंगे, कि यदि हो सके तो चुने हुओं को भी भरमा दें। २५ देखो, मैं ने पहिले से तुम से यह सब कुछ कह दिया है। २६ इसलिये यदि वे तुम से कहें, देखो, वह जंगल में है, तो बाहर न निकल जाना; देखो, वह कोठरियों में है, तो प्रतीति न करना। २७ क्योंकि जैसे बिजली पूर्व से निकलकर पश्चिम तक चमकती जाती है, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का भी आना होगा। २८ जहां लोथ हो, वहीं गिद्ध इकट्ठे होंगे॥

२९ उन दिनों के क्लेश के बाद तुरन्त सूर्य अन्धियारा हो जायगा, और चान्द का प्रकाश जाता रहेगा, और तारे आकाश से गिर पड़ेंगे और आकाश की शक्तियां हिलाई जाएंगी। ३० तब मनुष्य के पुत्र का चिन्ह आकाश में दिखाई देगा, और तब पृथ्वी के सब कुलों के लोग छाती पीटेंगे; और मनुष्य के पुत्र को बड़ी सामर्थ्य और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों

पर आते देखेंगे। ३१ और वह तुरही के बड़े शब्द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशा से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे॥

जागृत रहने की चितावनी

३२ अंजीर के पेड़ से यह दृष्टान्त सीखो: जब उसकी डाली कोमल हो जाती और पत्ते निकलने लगते हैं, तो तुम जान लेते हो, कि ग्रीष्म काल निकट है। ३३ इसी रीति से जब तुम इन सब बातों को देखो, तो जान लो, कि वह निकट है; वरन द्वार ही पर है। ३४ मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें, तब तक यह पीढ़ी जाती न रहेगी। ३५ आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी। ३६ उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता; न स्वर्ग के दूत, और न पुत्र, परन्तु केवल पिता। ३७ जैसे नूह के दिन थे, वैसा ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। ३८ क्योंकि जैसे जल-प्रलय से पहिले के दिनों में, जिस दिन तक कि नूह जहाज पर न चढ़ा, उस दिन तक लोग खाते-पीते थे, और उन में ब्याह शादी होती थी। ३९ और जब तक जल-प्रलय आकर उन सब को बहा न ले गया, तब तक उनको कुछ भी मालूम न पड़ा; वैसे ही मनुष्य के पुत्र का आना भी होगा। ४० उस समय दो जन खेत में होंगे, एक ले लिया जाएगा और दूसरा छोड़ दिया जाएगा। ४१ दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगी, एक ले ली जाएगी, और दूसरी छोड़ दी जाएगी। ४२ इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम नहीं जानते कि तुम्हारा प्रभु किस दिन आएगा॥

भले और बुरे दासों का दृष्टान्त

४३ परन्तु यह जान लो कि यदि घर का स्वामी जानता होता कि चोर किस पहर आएगा, तो जागता रहता; और अपने घर में सेंध लगने न देता। ४४ इसलिये तुम भी तैयार रहो, क्योंकि जिस घड़ी के विषय में तुम सोचते भी नहीं हो, उसी घड़ी मनुष्य का पुत्र आ जाएगा। ४५ सो

वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है, जिसे स्वामी ने अपने नौकर चाकरों पर सरदार ठहराया, कि समय पर उन्हें भोजन दे? ४६ धन्य है, वह दास, जिसे उसका स्वामी आकर ऐसा ही करते पाए। ४७ मैं तुम से सच कहता हूं; वह उसे अपनी सारी सम्पत्ति पर सरदार ठहराएगा। ४८ परन्तु यदि वह दुष्ट दास सोचने लगे, कि मेरे स्वामी के आने में देर है। ४९ और अपने साथी दासों को पीटने लगे, और पियक्कड़ों के साथ खाए पीए। ५० तो उस दास का स्वामी ऐसे दिन आएगा, जब वह उसकी बाट न जोहता हो, और ऐसी घड़ी कि वह न जानता हो। ५१ और उसे भारी ताड़ना देकर, उसका भाग कपटियों के साथ ठहराएगा। वहां रोना और दांत पीसना होगा॥

दस कुंवारी का दृष्टान्त

२५ तब स्वर्ग का राज्य उन दस कुंवारियों के समान होगा जो अपनी मशालें लेकर दूलहे से भेंट करने को निकलीं। २ उन में पांच मूर्ख और पांच समझदार थीं। ३ मूर्खों ने अपनी मशालें तो लीं, परन्तु अपने साथ तेल नहीं लिया। ४ परन्तु समझदारों ने अपनी मशालों के साथ अपनी कुप्पियों में तेल भी भर लिया। ५ जब दूलहे के आने में देर हुई, तो वे सब ऊंघने लगीं, और सो गईं। ६ आधी रात को धूम मची, कि देखो, दूलहा आ रहा है, उस से भेंट करने के लिये चलो। ७ तब वे सब कुंवारियां उठकर अपनी मशालें ठीक करने लगीं। ८ और मूर्खों ने समझदारों से कहा, अपने तेल में से कुछ हमें भी दो, क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं। ९ परन्तु समझदारों ने उत्तर दिया कि कदाचित हमारे और तुम्हारे लिये पूरा न हो; भला तो यह है, कि तुम बेचनेवालों के पास जाकर अपने लिये मोल ले लो। १० जब वे मोल लेने को जा रही थीं, तो दूलहा आ पहुंचा, और जो तैयार थीं, वे उसके साथ ब्याह के घर में चली गईं और द्वार बन्द किया गया। ११ इसके बाद वे दूसरी कुंवारियां भी आकर कहने लगीं, हे स्वामी, हे स्वामी, हमारे लिये द्वार खोल दे। १२ उस ने उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच कहता हूं, मैं तुम्हें

नहीं जानता। १३ इसलिये जागते रहो, क्योंकि तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को॥

तोड़ों का दृष्टान्त

१४ क्योंकि यह उस मनुष्य की सी दशा है जिस ने परदेश को जाते समय अपने दासों को बुलाकर, अपनी सम्पत्ति उनको सौंप दी। १५ उस ने एक को पांच तोड़े, दूसरे को दो, और तीसरे को एक; अर्थात् हर एक को उसकी सामर्थ्य के अनुसार दिया, और तब परदेश चला गया। १६ तब जिसको पांच तोड़े मिले थे, उस ने तुरन्त जाकर उन से लेन देन किया, और पांच तोड़े और कमाए। १७ इसी रीति से जिसको दो मिले थे, उस ने भी दो और कमाए। १८ परन्तु जिसको एक मिला था, उस ने जाकर मिट्टी खोदी, और अपने स्वामी के रुपये छिपा दिए। १९ बहुत दिनों के बाद उन दासों का स्वामी आकर उन से लेखा लेने लगा। २० जिसको पांच तोड़े मिले थे, उस ने पांच तोड़े और लाकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे पांच तोड़े सौंपे थे, देख, मैं ने पांच तोड़े और कमाए हैं। २१ उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा; मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। २२ और जिसको दो तोड़े मिले थे, उस ने भी आकर कहा; हे स्वामी, तू ने मुझे दो तोड़े सौंपे थे, देख, मैं ने दो तोड़े और कमाए। २३ उसके स्वामी ने उस से कहा, धन्य हे अच्छे और विश्वासयोग्य दास, तू थोड़े में विश्वासयोग्य रहा, मैं तुझे बहुत वस्तुओं का अधिकारी बनाऊंगा अपने स्वामी के आनन्द में सम्भागी हो। २४ तब जिसको एक तोड़ा मिला था, उस ने आकर कहा; हे स्वामी, मैं तुझे जानता था, कि तू कठोर मनुष्य है: तू जहां नहीं बोता वहां काटता है, और जहां नहीं छींटता वहां से बटोरता है। २५ सो मैं डर गया और जाकर तेरा तोड़ा मिट्टी में छिपा दिया; देख जो तेरा है, वह यह है। २६ उसके स्वामी ने उसे उत्तर दिया, कि हे दुष्ट और आलसी दास; जब तू यह जानता था, कि जहां मैं ने नहीं बोया वहां से काटता हूं; और जहां मैं ने नहीं छींटा वहां से बटोरता हूं। २७ तो तुझे

चाहिये था, कि मेरा रुपया सर्राफों को दे देता, तब मैं आकर अपना धन ब्याज समेत ले लेता। २८ इसलिये वह तोड़ा उस से ले लो, और जिसके पास दस तोड़े हैं, उसको दे दो। २९ क्योंकि जिस किसी के पास है, उसे और दिया जाएगा; और उसके पास बहुत हो जाएगा: परन्तु जिसके पास नहीं है, उस से वह भी जो उसके पास है, ले लिया जाएगा। ३० और इस निकम्मे दास को बाहर के अन्धेरे में डाल दो, जहां रोना और दांत पीसना होगा॥

न्याय का दिन

३१ जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा, और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे तो वह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। ३२ और सब जातियां उसके साम्हने इकट्ठी की जाएंगी; और जैसा चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसा ही वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा। ३३ और वह भेड़ों को अपनी दहिनी ओर और बकरियों को बाईं ओर खड़ी करेगा। ३४ तब राजा अपनी दहिनी ओर वालों से कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया हुआ है। ३५ क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं पियासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। ३६ मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए। ३७ तब धर्मी उसको उत्तर देंगे कि हे प्रभु, हम ने कब तुझे भूखा देखा और खिलाया? या पियासा देखा, और पिलाया? ३८ हम ने कब तुझे परदेशी देखा और अपने घर में ठहराया या नंगा देखा, और कपड़े पहिनाए? ३९ हम ने कब तुझे बीमार या बन्दीगृह में देखा और तुझ से मिलने आए? ४० तब राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया। ४१ तब वह बाईं ओर वालों से कहेगा, हे स्रापित लोगो, मेरे साम्हने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान

और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है। ४२ क्योंकि मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को नहीं दिया; मैं पियासा था, और तुम ने मुझे पानी नहीं पिलाया। ४३ मैं परदेशी था, और तुम ने मुझे अपने घर में नहीं ठहराया; मैं नंगा था, और तुम ने मुझे कपड़े नहीं पहिनाए; बीमार और बन्दीगृह में था, और तुम ने मेरी सुधि न ली। ४४ तब वे उत्तर देंगे, कि हे प्रभु, हम ने तुझे कब भूखा, या पियासा, या परदेशी, या नंगा, या बीमार, या बन्दीगृह में देखा, और तेरी सेवा टहल न की? ४५ तब वह उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया। ४६ और यह अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे॥

यीशु की हत्या का षड्यन्त्र

२६ जब यीशु ये सब बातें कह चुका, तो अपने चेलों से कहने लगा। २ तुम जानते हो कि दो दिन के बाद फसह का पर्ब्ब होगा; और मनुष्य का पुत्र क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिये पकड़वाया जाएगा। ३ तब महायाजक और प्रजा के पुरनिए काइफा नाम महां-याजक के आंगन में इकट्ठे हुए। ४ और आपस में विचार करने लगे कि यीशु को छल से पकड़कर मार डालें। ५ परन्तु वे कहते थे, कि पर्ब्ब के समय नहीं; कहीं ऐसा न हो कि लोगों में बलवा मच जाए॥

बैतनिय्याह में यीशु पर तेल मलना

६ जब यीशु बैतनिय्याह में शमौन कोढ़ी के घर में था, ७ तो एक स्त्री संगमरमर के पात्र में बहुमोल इत्र लेकर उसके पास आई, और जब वह भोजन करने बैठा था, तो उसके सिर पर उण्डेल दिया। ८ यह देखकर, उसके चेले रिसियाए और कहने लगे, इसका क्यों सत्यानाश किया गया? ९ यह तो अच्छे दाम पर बिककर कंगालों को बांटा जा सकता था। १० यह जानकर यीशु ने उन से कहा, स्त्री को क्यों सताते हो? उस ने मेरे साथ भलाई की है। ११ कंगाल तुम्हारे साथ सदा रहते हैं, परन्तु

मैं तुम्हारे साथ सर्वदैव न रहूंगा। १२ उस ने मेरी देह पर जो यह इत्र उण्डेला है, वह मेरे गाड़े जाने के लिये किया है। १३ मैं तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं यह सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम का वर्णन भी उसके स्मरण में किया जाएगा ॥

यहूदा का विश्वासघात

१४ तब यहूदा इस्करियोती नाम बारह चेलों में से एक ने महायाजकों के पास जाकर कहा। १५ यदि मैं उसे तुम्हारे हाथ पकड़वा दूं, तो मुझे क्या दोगे? उन्हों ने उसे तीस चान्दी के सिक्के तौलकर दे दिए। १६ और वह उसी समय से उसे पकड़वाने का अवसर ढूंढ़ने लगा ॥

अन्तिम भोज

१७ अखमीरी रोटी के पर्ब्ब के पहिले दिन, चेले यीशु के पास आकर पूछने लगे; तू कहां चाहता है कि हम तेरे लिये फसह खाने की तैयारी करें? १८ उस ने कहा, नगर में फलाने के पास जाकर उस से कहो, कि गुरु कहता है, कि मेरा समय निकट है, मैं अपने चेलों के साथ तेरे यहां पर्ब्ब मनाऊंगा। १९ सो चेलों ने यीशु की आज्ञा मानी, और फसह तैयार किया। २० जब सांझ हुई, तो वह बारहों के साथ भोजन करने के लिये बैठा। २१ जब वे खा रहे थे, तो उस ने कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा। २२ इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उस से पूछने लगा, हे गुरु, क्या वह मैं हूं? २३ उस ने उत्तर दिया, कि जिस ने मेरे साथ थाली में हाथ डाला है, वही मुझे पकड़वाएगा। २४ मनुष्य का पुत्र तो जैसा उसके विषय में लिखा है, जाता ही है; परन्तु उस मनुष्य के लिये शोक है जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिये भला होता। २५ तब उसके पकड़वानेवाले यहूदा ने कहा कि हे रब्बी, क्या वह मैं हूं? उस ने उस से कहा, तू कह चुका। २६ जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली, और आशीष मांगकर तोड़ी,

और चेलो को देकर कहा, लो, खाओ; यह मेरी देह है। २७ फिर उस ने कटोरा लेकर, धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ। २८ क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है, जो बहुतों के लिये पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है। २९ मैं तुम से कहता हूं कि दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं॥

यीशु चेलों के परित्याग की भविष्यद्वाणी करता है

३० फिर वे भजन गाकर जैतून पहाड़ पर गए॥

३१ तब यीशु ने उन से कहा; तुम सब आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे को मारूंगा; और झुण्ड की भेड़ें तित्तर बित्तर हो जाएंगी। ३२ परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहिले गलील को जाऊंगा। ३३ इस पर पतरस ने उस से कहा, यदि सब तेरे विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु मैं कभी ठोकर न खाऊंगा। ३४ यीशु ने उस से कहा, मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा। ३५ पतरस ने उस से कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी हो, तौभी मैं तुझ से कभी न मुकरूंगा: और ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा॥

यीशु गतसमनी में

३६ तब यीशु अपने चेलों के साथ गतसमनी नाम एक स्थान में आया और अपने चेलों से कहने लगा कि यहीं बैठे रहना, जब तक कि मैं वहां जाकर प्रार्थना करूं। ३७ और वह पतरस और जबदी के दोनों पुत्रों को साथ ले गया, और उदास और व्याकुल होने लगा। ३८ तब उस ने उन से कहा; मेरा जी बहुत उदास है, यहा तक कि मेरे प्राण निकला चाहते हैं: तुम यहीं ठहरो, और मेरे साथ जागते रहो। ३९ फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर मुंह के बल गिरा, और यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।

४० फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया, और पतरस से कहा; क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके? ४१ जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो : आत्मा तो तैयार है, परन्तु शरीर दुर्बल है। ४२ फिर उस ने दूसरी बार जाकर यह प्रार्थना की; कि हे मेरे पिता, यदि यह मेरे पीए बिना नहीं टल सकता तो तेरी इच्छा पूरी हो। ४३ तब उस ने आकर उन्हें फिर सोते पाया, क्योंकि उनकी आंखें नींद से भरी थीं। ४४ और उन्हें छोड़कर फिर चला गया, और वही बात फिर कहकर, तीसरी बार प्रार्थना की। ४५ तब उस ने चेलों के पास आकर उन से कहा; अब सोते रहो, और विश्राम करो : देखो घड़ी आ पहुंची है, और मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ पकड़वाया जाता है। ४६ उठो, चलें; देखो, मेरा पकड़वानेवाला निकट आ पहुंचा है।।

यीशु का पकड़वाया जाना

४७ वह यह कह ही रहा था, कि देखो, यहूदा जो बारहों में से एक था, आया, और उसके साथ महायाजकों और लोगों के पुरनियों की ओर से बड़ी भीड़, तलवारें और लाठियां लिए हुए आई। ४८ उसके पकड़वाने-वाले ने उन्हें यह पता दिया था कि जिसको मैं चूम लूं वही है; उसे पकड़ लेना। ४९ और तुरन्त यीशु के पास आकर कहा; हे रब्बी नमस्कार; और उसको बहुत चूमा। ५० यीशु ने उस से कहा; हे मित्र, जिस काम के लिये तू आया है, उसे कर ले। तब उन्हों ने पास आकर यीशु पर हाथ डाले, और उसे पकड़ लिया। ५१ और देखो, यीशु के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ाकर अपनी तलवार खींच ली और महायाजक के दास पर चलाकर उसका कान उड़ा दिया। ५२ तब यीशु ने उस से कहा; अपनी तलवार काठी में रख ले क्योंकि जो तलवार चलाते हैं, वे सब तलवार से नाश किए जाएंगे। ५३ क्या तू नहीं समझता, कि मैं अपने पिता से बिनती कर सकता हूं, और वह स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा? ५४ परन्तु पवित्र शास्त्र की वे बातें कि ऐसा ही होना अवश्य है, क्योंकर पूरी होंगी? ५५ उसी घड़ी यीशु ने भीड़ से कहा; क्या तुम तलवारें और लाठियां लेकर मुझे

डाकू के समान पकड़ने के लिये निकले हो? मैं हर दिन मन्दिर में बैठकर उपदेश दिया करता था, और तुम ने मुझे नहीं पकड़ा। ५६ परन्तु यह सब इसलिये हुआ है, कि भविष्यद्वक्ताओं के वचन पूरे हों: तब सब चेले उसे छोड़कर भाग गए॥

महायाजक के सम्मुख यीशु की जांच

५७ और यीशु के पकड़नेवाले उसको काइफा नाम महायाजक के पास ले गए, जहां शास्त्री और पुरनिए इकट्ठे हुए थे। ५८ और पतरस दूर से उसके पीछे पीछे महायाजक के आंगन तक गया, और भीतर जाकर अन्त देखने को प्यादों के साथ बैठ गया। ५९ महायाजक और सारी महासभा यीशु को मार डालने के लिये उसके विरोध में झूठी गवाही की खोज में थे। ६० परन्तु बहुत से झूठे गवाहों के आने पर भी न पाई: अन्त में दो जनों ने आकर कहा; ६१ कि इस ने कहा है; कि मैं परमेश्वर के मन्दिर को ढा सकता हूं और उसे तीन दिन में बना सकता हूं। ६२ तब महायाजक ने खड़े होकर उस से कहा, क्या तू कोई उत्तर नहीं देता? ये लोग तेरे विरोध में क्या गवाही देते हैं? परन्तु यीशु चुप रहा: महायाजक ने उस से कहा। ६३ मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूं, कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हम से कह दे। ६४ यीशु ने उस से कहा; तू ने आप ही कह दिया; वरन मैं तुम से यह भी कहता हूं, कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान की दहिनी ओर बैठे, और आकाश के बादलों पर आते देखोगे। ६५ तब महायाजक ने अपने वस्त्र फाड़कर कहा, इस ने परमेश्वर की निन्दा की है, अब हमें गवाहों का क्या प्रयोजन? देखो, तुम ने अभी यह निन्दा सुनी है! ६६ तुम क्या समझते हो? उन्हों ने उत्तर दिया, यह वध होने के योग्य है। ६७ तब उन्हों ने उसके मुंह पर थूका, और उसे घूंसे मारे, औरों ने थप्पड़ मार के कहा। ६८ हे मसीह, हम से भविष्यद्वाणी करके कह: कि किस ने तुझे मारा?

पतरस का यीशु को अस्वीकार करना

६९ और पतरस बाहर आंगन में बैठा हुआ था; कि एक लौंडी ने उसके पास आकर कहा, तू भी यीशु गलीली के साथ था। ७० उस ने सब के साम्हने यह कहकर इन्कार किया और कहा, मैं नहीं जानता तू क्या कह रही है। ७१ जब वह बाहर डेवढ़ी में चला गया, तो दूसरी ने उसे देखकर उन से जो वहां थे कहा; यह भी तो यीशु नासरी के साथ था। ७२ उस ने शपथ खाकर फिर इन्कार किया कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता। ७३ थोड़ी देर के बाद, जो वहां खड़े थे, उन्हों ने पतरस के पास आकर उस से कहा, सचमुच तू भी उन में से एक है; क्योंकि तेरी बोली-तेरा भेद खोल देती है। ७४ तब वह धिक्कार देने और शपथ खाने लगा, कि मैं उस मनुष्य को नहीं जानता, और तुरन्त मुर्ग ने बांग दी। ७५ तब पतरस को यीशु की कही हुई बात स्मरण आई कि मुर्ग के बांग देने से पहिले तू तीन बार मेरा इन्कार करेगा और वह बाहर जाकर फूट फूटकर रोने लगा॥

रोमियों के राज्यपाल पीलातुस के सम्मुख यीशु का उपस्थित किया जाना

२७ जब भोर हुई, तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की। २ और उन्हों ने उसे बान्धा और ले जाकर पीलातुस हाकिम के हाथ में सौंप दिया॥

यहूदा की मृत्यु

३ जब उसके पकडवानेवाले यहूदा ने देखा कि वह दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चान्दी के सिक्के महायाजकों और पुरनियों के पास फेर लाया। ४ और कहा, मैं ने निर्दोषी को घात के लिये पकड़वाकर पाप किया है? उन्हों ने कहा, हमें क्या? तू ही जान। ५ तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फेंककर चला गया, और जाकर अपने आप को फांसी दी। ६ महायाजकों ने उन सिक्कों को लेकर कहा,

इन्हें भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लोहू का दाम है। ७ सो उन्हों ने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाड़ने के लिये कुम्हार का खेत मोल ले लिया। ८ इस कारण वह खेत आज तक लोहू का खेत कहलाता है। ९ तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ; कि उन्हों ने वे तीस सिक्के अर्थात् उस ठहराए हुए मूल्य को (जिसे इस्राएल की सन्तान में से कितनों ने ठहराया था) ले लिये। १० और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया॥

यीशु पीलातुस के सम्मुख

११ जब यीशु हाकिम के साम्हने खड़ा था, तो हाकिम ने उस से पूछा; कि क्या तू यहूदियों का राजा है? यीशु ने उस से कहा, तू आप ही कह रहा है। १२ जब महायाजक और पुरनिए उस पर दोष लगा रहे थे, तो उस ने कुछ उत्तर नहीं दिया। १३ इस पर पीलातुस ने उस से कहा: क्या तू नहीं सुनता, कि ये तेरे विरोध में कितनी गवाहियां दे रहे हैं? १४ परन्तु उस ने उसको एक बात का भी उत्तर नहीं दिया यहां तक कि हाकिम को बड़ा आश्चर्य हुआ। १५ और हाकिम की यह रीति थी, कि उस पर्ब्ब में लोगों के लिये किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता था। १६ उस समय बरअब्बा नाम उन्हीं में का एक नामी बन्धुआ था। १७ सो जब वे इकट्ठे हुए, तो पीलातुस ने उन से कहा; तुम किस को चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिये छोड़ दूं? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है? १८ क्योंकि वह जानता था कि उन्हों ने उसे डाह से पकड़वाया है। १९ जब वह न्याय की गद्दी पर बैठा हुआ था तो उसकी पत्नी ने उसे कहला भेजा, कि तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना; क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुःख उठाया है। २० परन्तु महायाजकों और पुरनियों ने लोगों को उभारा, कि वे बरअब्बा को मांग लें, और यीशु को नाश कराएं। २१ हाकिम ने उन से पूछा, कि इन दोनों में से किसको चाहते हो, कि तुम्हारे लिये छोड़ दूं? उन्हों ने कहा; बरअब्बा को। २२ पीलातुस ने

उन से पूछा; फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं? सब ने उस से कहा, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। २३ हाकिम ने कहा; क्यों उस ने क्या बुराई की है? परन्तु वे और भी चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे, "वह क्रूस पर चढ़ाया जाए"। २४ जब पीलातुस ने देखा, कि कुछ बन नही पड़ता परन्तु इसके विपरीत हुल्लड़ होता जाता है, तो उस ने पानी लेकर भीड़ के साम्हने अपने हाथ धोए, और कहा, मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं; तुम ही जानो। २५ सब लोगों ने उत्तर दिया, कि इसका लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो। २६ इस पर उस ने बरअब्बा को उनके लिये छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए॥

यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना

२७ तब हाकिम के सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर सारी पलटन उसके चहुं ओर इकट्ठी की। २८ और उसके कपड़े उतारकर उसे किरमिजी बागा पहिनाया। २९ और कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा; और उसके दहिने हाथ में सरकण्डा दिया और उसके आगे घुटने टेककर उसे ठट्ठे में उड़ाने लगे, कि हे यहूदियों के राजा नमस्कार। ३० और उस पर थूका; और वही सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे। ३१ जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो वह बागा उस पर से उतारकर फिर उसी के कपड़े उसे पहिनाए, और क्रूस पर चढ़ाने के लिये ले चले॥

३२ बाहर जाते हुए उन्हें शमौन नाम एक कुरेनी मनुष्य मिला, उन्हों ने उसे बेगार में पकड़ा कि उसका क्रूस उठा ले चले। ३३ और उस स्थान पर जो गुलगुता नाम की जगह अर्थात् खोपड़ी का स्थान कहलाता है पहुंचकर। ३४ उन्हों ने पित्त मिलाया हुआ दाखरस उसे पीने को दिया, परन्तु उस ने चखकर पीना न चाहा। ३५ तब उन्हों ने उसे क्रूस पर चढ़ाया; और चिट्ठियां डालकर उसके कपड़े बांट लिए। ३६ और वहां बैठकर उसका पहरा देने लगे। ३७ और उसका दोषपत्र, उसके सिर के ऊपर लगाया, कि "**यह यहूदियों का राजा यीशु है**"।

३८ तब उसके साथ दो डाकू एक दहिने और एक बाएं क्रूसों पर चढ़ाए गए। ३९ और आने जानेवाले सिर हिला हिलाकर उसकी निन्दा करते और यह कहते थे, ४० कि हे मन्दिर के ढानेवाले और तीन दिन में बनानेवाले, अपने आप को तो बचा; यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ। ४१ इसी रीति से महायाजक भी शास्त्रियों और पुरनियों समेत ठट्ठा कर करके कहते थे। ४२ इस ने औरों को बचाया, और अपने को नहीं बचा सकता: यह तो "इस्राएल का राजा है"। अब क्रूस पर से उतर आए, तो हम उस पर विश्वास करें। ४३ उस ने परमेश्वर पर भरोसा रखा है, यदि वह इसको चाहता है, तो अब इसे छुड़ा ले, क्योंकि इस ने कहा था, कि "मैं परमेश्वर का पुत्र हूं"। ४४ इसी प्रकार डाकू भी जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे उसकी निन्दा करते थे॥

यीशु की मृत्यु

४५ दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अन्धेरा छाया रहा। ४६ तीसरे पहर के निकट यीशु ने बड़े शब्द से पुकारकर कहा, एली, एली, लामा शबक्तानी? अर्थात् हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? ४७ जो वहां खड़े थे, उन में से कितनों ने यह सुनकर कहा, वह तो एलिय्याह को पुकारता है। ४८ उन में से एक तुरन्त दौड़ा, और स्पंज लेकर सिरके में डुबोया, और सरकण्डे पर रखकर उसे चुसाया। ४९ औरों ने कहा, रह जाओ, देखें, एलिय्याह उसे बचाने आता है कि नहीं। ५० तब यीशु ने फिर बड़े शब्द से चिल्लाकर प्राण छोड़ दिया। ५१ और देखो, मन्दिर का परदा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो गया: और धरती डोल गई और चटानें तड़क गईं। ५२ और कब्रें खुल गईं; और सोए हुए पवित्र लोगोंकी बहुत लोथें जी उठीं। ५३ और उसके जी उठने के बाद वे कब्रों में से निकलकर पवित्र नगर में गए, और बहुतों को दिखाई दिए। ५४ तब सूबेदार और जो उसके साथ यीशु का पहरा दे रहे थे, भुईंडोल और जो कुछ हुआ था, देखकर अत्यन्त डर गए, और कहा, सचमुच "यह परमेश्वर का पुत्र था।" ५५ वहां बहुत सी स्त्रियां जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके

साथ आई थीं, दूर से यह देख रही थीं। ५६ उन में मरियम मगदलीनी, और याकूब और योसेस की माता मरियम, और जबदी के पुत्रों की माता थीं॥

यीशु का गाड़ा जाना

५७ जब सांझ हुई तो यूसुफ नाम अरिमतियाह का एक धनी मनुष्य जो आप ही यीशु का चेला था आया: उस ने पीलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांगी। ५८ इस पर पीलातुस ने दे देने की आज्ञा दी। ५९ यूसुफ ने लोथ को लेकर एक साफ महीन चादर में लपेटा। ६० और उसे अपनी नई कब्र में रखा, जो उस ने चटान में खुदवाई थी, और कब्र के द्वार पर बड़ा पत्थर लुढ़काकर चला गया। ६१ और मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम वहां कब्र के साम्हने बैठी थीं॥

६२ दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, महायाजकों और फरीसियों ने पीलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा। ६३ हे महाराज, हमें स्मरण है, कि उस भरमानेवाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा। ६४ सो आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए, ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएं, और लोगों से कहने लगें, कि वह मरे हुओं में से जी उठा है: तब पिछला धोखा पहिले से भी बुरा होगा। ६५ पीलातुस ने उन से कहा, तुम्हारे पास पहरुए तो हैं जाओ, अपनी समझ के अनुसार रखवाली करो। ६६ सो वे पहरुओं को साथ लेकर गए, और पत्थर पर मुहर लगाकर कब्र की रखवाली की॥

यीशु का पुनरुत्थान

२८ सब्त के दिन के बाद सप्ताह के पहिले दिन पह फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आईं। २ और देखो एक बड़ा भुईंडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा, और पास आकर उसने पत्थर को लुढ़का दिया, और उस पर बैठ गया। ३ उसका रूप बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्ज्वल था। ४ उसके भय से पहरुए कांप उठे, और मृतक समान हो

गए। ५ स्वर्गदूत ने स्त्रियों से कहा, कि तुम मत डरो: मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था ढूंढ़ती हो। ६ वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है; आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था। ७ और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है, और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है, वहां उसका दर्शन पाओगे, देखो, मैं ने तुम से कह दिया। ८ और वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिये दौड़ गईं। ९ और देखो, यीशु उन्हें मिला, और कहा; "सलाम" और उन्हों ने पास आकर और उसके पांव पकड़कर उसको दण्डवत् किया। १० तब यीशु ने उन से कहा, मत डरो; मेरे भाइयों से जाकर कहो, कि गलील को चलें जाएं वहां मुझे देखेंगे॥

११ वे जा ही रही थी, कि देखो, पहरुओं में से कितनों ने नगर में आकर पूरा हाल महायाजकों से कह सुनाया। १२ तब उन्हों ने पुरनियों के साथ इकट्ठे होकर सम्मति की, और सिपाहियों को बहुत चान्दी देकर कहा। १३ कि यह कहना, कि रात को जब हम सो रहे थे, तो उसके चेले आकर उसे चुरा ले गए। १४ और यदि यह बात हाकिम के कान तक पहुंचेगी, तो हम उसे समझा लेंगे और तुम्हें जोखिम से बचा लेंगे। १५ सो उन्हों ने रुपए लेकर जैसा सिखाए गए थे, वैसा ही किया; और यह बात आज तक यहूदियों में प्रचलित है॥

गलील में यीशु का चेलों पर प्रगट होना

१६ और ग्यारह चेले गलील में उस पहाड़ पर गए, जिसे यीशु ने उन्हें बताया था। १७ और उन्हों ने उसके दर्शन पाकर उसे प्रणाम किया, पर किसी किसी को सन्देह हुआ। १८ यीशु ने उनके पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। १९ इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। २० और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥

Printed at Navabharat Printers & Traders, Madras-86
For The Bible Society of India,
20, Mahatma Gandhi Road, Bangalore, India.